॥ सामप्रातिशाख्यम् ॥

(अतिप्राचीनम्)

॥ सामगाचार्य्यवर्य्येण महामुनिना पुष्पेण कृतम् ॥

चतुर्व्वेदानुवादकेन,
सामगाचार्य्यश्रीसत्यव्रतशर्म्मणा सम्पादितम्,
बोधसौकर्य्याय यावगृहीतीयितञ्च ॥

CALCUTTA.

16—1, GHOSHE'S LANE, SATYA PRESS.

Printed and Published by Priya Vrata Bhattacharjya.

1890.

গ্রন্থারম্ভসূচনা।

আমি গত তৃতীয় সন্ যে সময়ে স্বাস্থ্যলাভাশয়ে বায়ু-বারি-পরিবর্ত্তনের জন্য সপরিবার ৺বৈদ্যনাথ ধামে অবস্থিতি করিতেছিলাম, সেই সময়ে মিথিলার মধ্যে অদ্বিতীয় সামাধ্যাপক, দ্বারবঙ্গাধিপতির কনিষ্ঠ সহোদর শ্রীমান্ রাজা রামেশ্বর সিংহ বাহাদুর মহোদয়ের সামশিক্ষাগুরু, শ্রীযুক্ত আচার্য্য অযোধ্যানাথ মিশ্র মহোদয়,আমার বাসায় সপরিজন আগমন পূর্ব্বক আমার সহিত বৈদিক-আলাপ করিয়া সাম-বেদের প্রাতিশাখ্যাদি গ্রন্থ পাওআ যায় এবং সামসমস্তের অন্তে যে এক-একটি অক্ষর প্রাচীন পুস্তকে দেখা যায়, তাহারও অর্থ আছে ও তাদৃশ-অর্থ-জ্ঞাপক পুস্তকও আছে,—ইত্যাদি সবিশেষ অবগত হইয়া বড়ই বিস্মিত হ'ন এবং ঐ সমস্ত অধিগত হইবার জন্য লালায়িত হওত উপর্য্যুপরি কয়েক দিবস আমার নিকটে আসিতে থাকেন ; পরং সেই সময়ে দৈববিড়ম্বনাবশে তাঁহার বাতের পীড়া বিবৃদ্ধ হয় এবং আমার প্রত্যাগমনের চেষ্টাও উপস্থিত হয় সুতরাং তিনি স্বকার্য্য-সাধনে সম্পূর্ণ কৃতকার্য্য হইতে না পারিয়া ভবিষ্যতে ইষ্টসিদ্ধির আশয়ে একখানি প্রার্থনা-পত্র লিখিয়া নিজ ছাত্র দ্বারা পাঠাইয়াদেন। উহাতে অন্যান্য বিষয়ের সহিত "সামপ্রাতিশাখ্য"-প্রাপ্তির জন্যও প্রার্থনা ছিল। সেই মৈথিলাচার্য্য মহোদয়ের প্রার্থনাও আমার এই সামপ্রাতিশাখ্য প্রচারের একটি নিদান। উক্ত মৈথিল সামগাচার্য্য মহোদয়ের লিখিত প্রার্থনাগুলি পরপৃষ্ঠে যথাবৎ প্রকাশ করিতেছি॥

শ্রীসত্যব্রত শর্ম্মা॥

॥ सूचना ॥

द्वारवङ्गाधिपानुजराजश्रीरामेश्वरसिंहबाहादुरस्य सामवेदाध्यापकेन मिथिलैकभूषणेन महामतिना श्रीमदयोध्यानाथमिश्रमहोदयेन मैथिलसामगाचार्येण खविधुवसुमेदिनिमित-शाकीयमार्गशीर्षे वैद्यनाथचैत्रे मह्यमया प्रेषितं यत् स्वकरकमलाङ्कितं प्रार्थनम्, तदनु-रोधरचणश्चैतस्य सामप्रातिशाख्यस्य प्रकटने बीजान्तर मिति तदिह प्रकाश्यते च यथायथम्। पश्यन्तु तावत्—

" * * * सामतन्त्र सभाष्य १ अक्तन्त्र सभाष्य १ सामवेद का प्रातिशाख्य १ और प्रतिसाम के अन्त मे एक एक अक्षर लिखा रहता है उस का सूत्रावली १ इत्यादि सामवेदोपयोगी यो अपूर्व अपूर्व विषय आप का पास सुना है उस सभ का नाम लिख करके भेज दीजिएगा कृपायुक्त रहि-एगा एही हमारा प्रार्थना है और अपाने घर का ठेकाना और पूरा नाम अपाना लिख कर दीजिएगा की उसी पते से चीठी पत्री हम लिखा करेंगे।"

॥ अथ सामप्रातिशाख्यप्रकाशकोक्तिः ॥

भो भो प्रत्नलिप्सवो यूयं मा माशीर्भिरस्माभिनन्दत,—पश्यत तावदतिविश्रुत मप्येतद्दृष्टचरं प्रायः, प्रत्नानुसन्धानतत्पराणा मप्यतिदुर्लभं नाममात्रावशिष्टकल्प मनिर्द्दिष्टकर्त्तृकं पुण्यर्षिप्रणीतं वा अतिप्रामाणिकं पाणिनीयादिभ्यो मीमांसासूत्रादिभ्यश्च पुरातनं सामगजीवनं सामव्याकरण मिदं दृक्पथं नीयते भवता मच्चिकर्णशोर्वादभञ्जनायेति। एतस्यैव हि तार्त्तीयिकं सूत्र मेक मवलम्ब्यारचितं मीमांसादर्शननवमाध्यायीयनवमाधिकरणम्; तथोक्त मधिकरणमालाया मपि "तथाच सामगा आहुः—'वृद्ध' तालव्य माइ भवति'—इति"—इति।

सोऽयं सामग्रन्थो द्वादशप्रपाठकात्मकः। तत्राद्ययोर्द्वयोः प्रपाठकयोः दशरात्रसंवत्सरैकाहाहीनसत्रप्रायश्चित्तक्षुद्रानुसारतो हिः स्तोत्रियपरिवायकाभिधानादीन्यभिहितानि; ततो दशसु प्रपाठकेषु साम्नां भावादयो निरूपिताः समग्राः समन्तात्। तत्सङ्ग्रहश्लोकांश्चाह आचार्यः स्वय मेवैतन्नवमद्वितीये। तथाहि —

"अथ भावान् प्रवक्ष्यामः प्रगाणं यैर्विधीयते।
आर्चिकश्च स्तौभिकं चैव पदं विक्रियते तु यैः॥
आयित्वं प्रकृतिं चैव वृद्धं चावृद्ध मेव च।
गतागतं च स्तोभाना मुच्चनीचं तथैव च॥
सन्धिवत् पदवत्तान मत्न मार्भाव मेव च।
प्रश्लेषाश्चाथ विश्लेषा जह्ये त्वेव निबोधत॥
संकृष्टश्च विकृष्टश्च व्यञ्जनं लुप्त मतिहृतम्।
आभावाश्च विकाराश्च भावानूहेऽभिलक्षयेत्॥

एतैर्भावैस्तु गायन्ति सर्वाः शाखाः पृथक्पृथक् ।
पञ्चस्वेव तु गायन्ति भूयिष्ठानि स्वरेषु तु ॥
सामानि षट्सु चान्यानि सप्तसु द्वे तु कौथुमाः ।
ऊनाना मन्यथा गीतिः पादाना मधिकाश्च ये ॥
योनिदृष्टाः समा ये ऽन्ये पादास्त्वक्षरशः स्मृताः ।
आयेभावस्य नेदानीं दीर्घं यत्रैव कथ्यते ॥
कर्षणे तु निवर्त्तेत त्वायिवाया मुपद्रवे ।
औभावो दृश्यते साम्नि औभावस्य यथाक्रमम् ॥
अभ्युदूहे न सर्वत्र ऊहे गीतौ रहस्यवत् ।
स्वादिपर्वणि तिस्त्रायां तथैवान्येषु सामसु ॥
आर्चिकं निधनं न्याये स्तोभिकं वा यदक्षरम् ।
क्रुष्टाक्रुष्टम्भवेत्स्वार्थ्य मन्तोदात्तं द्वये स्वरम् ॥
मथाजनᳵसदद्वोना माविशासिविदेस्तु जित् ।
त्वनाद्दयᳵश्रियेतिर्भारयिम्मियमभिहिता ।
उसावसन्तमन्धर्म्मन्तुतडडाःषिभिर्द्वयन् ।
न्यायादेतान्यपेतानि श्रुतएकै द्वये स्वरम् ।
त्रैभासपौष्कलाष्टेडरयिष्ठाच्छिद्रधर्म्मसु ।
त्रैताश्ववतशौक्ताभ्यौचतुःषडिडयोस्तथा ।
षड्भासे पौष्कले सप्त त्रौण्येष्टेडे पृथक् ऋचे ।
रयिष्ठौक्ते द्वयं स्तोभे द्वे द्वे न्यायविरोधिनी ।
अश्वाभ्यौगवयोस्तोभधर्म्माच्छिद्रेषु पञ्चसु ॥"—इति ।

एवञ्चैतद् वक्तुं युज्यत एव, – न चास्याध्ययन मन्तरा साम-श्रोत्तरदाने सामर्थ्य मुपजायते, सामगत्वं वा पूर्यत इति ।

अथास्य प्रत्यक्षरशो बोधो यद्यप्यसामगाना मतिदुरूहः, परं

येषा मय मतिप्रयोजनीयः, तेषा मधीतसामग्रन्थानान्त्वतीव सुग्रहः ; ततः किञ्चित मेतट्टीकयेति मे तत्प्रणयने सम्मति न तथा यत्नो यथा मूलरचणे इति शम् ॥

যে সকল মহোদয় প্রয়োজনীয় অতিপ্রাচীন গ্রন্থাদির লাভের ইচ্ছা করেন, তাঁহারা অদ্য আমাকে আশীঃ-প্রদানাদির দ্বারা অভিনন্দিত করুন! দেখুন,—অতিবিখ্যাত অথচ অদৃশ্যকল্প, এমন কি প্রাচীনগ্রন্থাদির অনুসন্ধানে বদ্ধকটি য়ুরোপীয় পণ্ডিতগণেরও দুষ্প্রাপ্য, এক্ষণে নামমাত্রাবশিষ্ট বলিলেও চলে, সম্ভবত পুষ্পনামক মহর্ষির প্রণীত, অতিশয় প্রামাণিক, পাণিনিসূত্র হইতে—সর্ব্বদর্শনজ্যেষ্ঠ মীমাংসা হইতেও পুরাতন, সামগগণের জীবনস্বরূপ, এই সামবেদীয় ব্যাকরণখানি আপনাদের চক্ষু-কর্ণের বিবাদভঞ্জনার্থ দৃষ্টিপথে উপস্থিত করা হইতেছে।

এই গ্রন্থের তৃতীয়াধ্যায়ের প্রথম সূত্রটী অবলম্বন করিয়াই মীমাংসাদর্শনের নবমাধ্যায়ীয় নবমাধিকরণ বিরচিত হইয়াছে।

এই গ্রন্থখানি 'প্রপাঠক' নামক দ্বাদশ পরিচ্ছেদে বিভক্ত। সামবেদের সকলগ্রন্থেরই অধ্যায়গুলি প্রপাঠক সংজ্ঞায় ব্যবহৃত দেখাযায়। প্রথম ও দ্বিতীয় প্রপাঠকে যথাক্রমে দশরাত্র, সংবৎসর, একাহ, অহীন, সত্র, প্রায়শ্চিত্ত ও ক্ষুদ্র পর্ব্বানুসারে স্তোত্রিয়-সামসমস্তের সংজ্ঞাগুলি সংক্ষেপে দ্বিবার পরিচায়িত হইয়াছে। তৃতীয় ও চতুর্থ প্রপাঠকে সামমধ্যে শ্রুত আইভাব ও প্রকৃতিভাব সম্বন্ধে বিধিসমস্ত উপদিষ্ট হইয়াছে। পঞ্চমপ্রপাঠকে বৃদ্ধ ও অবৃদ্ধভাব যথাযথ ব্যবস্থিত হইয়াছে।

ষষ্ঠপ্রপাঠকে সামভক্তিসমূহের কোথায় গীত হইবে কোথায় বা অগীত থাকিবে ইত্যাদি নির্দ্দিষ্ট হইয়াছে। সপ্তম ও অষ্টম প্রপাঠকদ্বয়ে লোপ, আগম ও বর্ণবিকারের স্থানাদি পুঙ্খানুপুঙ্খরূপে উপদিষ্ট হইয়াছে। নবমপ্রপাঠকে ভাবকথন। এবং অন্তিমপ্রপাঠকে কৃষ্টাকৃষ্ট নির্ণয়াদির পরেই প্রস্তাবসম্বন্ধে লক্ষণাদি প্রকাশ করা হইয়াছে।

এতাবতা ইহা বলাই বাহুল্য যে এ গ্রন্থের আদ্যোপান্ত অধ্যয়ন ব্যতীত সামসম্বন্ধে কোনরূপ প্রশ্নেরই উত্তর দেওআ যায় না সুতরাং যে কোন সামগ এই গ্রন্থখানি ভালরূপে অধ্যয়ন করেন নাই, তিনি কোনমতেই আপনাকে সম্পূর্ণরূপ সামজ্ঞ বলিয়া বিবেচনা করিতে পারেন না।

যাঁহারা সামবেদ রীতিমত অধ্যয়ন না করিয়াছেন তাঁহাদের পক্ষে এ গ্রন্থের ভালরূপে অর্থ বোধ যদিও অতিকঠিন কিন্তু যাঁহাদের জন্য ইহা অতিপ্রয়োজনীয় তাঁহাদের অর্থাৎ সামগগণের পক্ষে কঠিন নহে; অতএব আপাতত ইহার মূলরক্ষাই যাদৃশ কর্ত্তব্য বিবেচিত হইল, টীকা প্রস্তুত করিয়া মুদ্রাযন্ত্র সাহায্যে তাহা প্রকাশ করা তাদৃশ প্রয়োজনীয় বলিয়া বোধ হইল না; — মূল রক্ষিত হইলে যথাকালে টীকাও অনেক হইতে পারিবে॥

ভারতরাজধানী, শাকাঃ ১৮১১। } শ্রীসত্যব্রতশর্ম্মা।

॥ अथ सामप्रातिशाख्यम् ॥

॥ हरिः ॐ ॥

ॐ उच्चामहो पुनारवजये आत्वौशनं कयादेव्यं तंवो धसं तरोलियꣳ स्वादिष्ठित पवस्वेन्द्रमच्छसफाच्काले पुरःश्यावागवेऽभिप्रिकावꣳ स्वासुज्ञीय मेधूसाकं वयंभरमधामेधं पान्तꣳहव्यं प्रवःशाक्तंर वयज्ञायु प्रथमः ॥ १

इन्द्राकवमयन्दासैर्द्दसद्मनमातूपारमभितुर्षभमिदङ्गारमिदंघृतश्चुन्निधनमातृ तिर्यंयोगेमेधमिन्द्रसुलेकौत्समाश्वन्द्रोणासुतासोमैकर्ह्वौप्रसोजयंत्वचेप्रसोहितमयासफमाच्चारꣳहर्य्येप्रसुन्वागौरीगौतममेकर्चात्वषायौक्ताय पुनायास्यमैडे द्वितीयः ॥ २

एतास्वेवविशिधनंवृषाशोभिष्ठमभिप्रव स्यैतंत्वामिदाछन्दसंयस्तेष्मतम्यवस्नमच्छपूषासुशंक्रुसुम्नानरीवितान्येकर्चाःपूषात्वचेक्रौञ्चंवृषायामवासहोविश्वादꣳष्ट्रम्यूर्वमुच्चान्तुष्टम्भमभिसोमदृगतमेप्रहिन्वाप्काराल्लिसः संक्रोशोघत्वाष्टम्भमन्तरशिरवन्तिस्रः छौहे तृतीयः ॥ ३

आसोसखावाचःश्रौत्तएकर्चौस्सुतावितन्वाष्ट्रौअन्ते-
स्वासुहिष्ठीयवर्णारश्वगानिदत्तसाकामन्तवदृष्ठोत्तरा-
भीश्वेत्लःपृष्ठस्तुपुनासत्राविश्वाःशोकंयोरायृम्नौक्षांत्त
रृस्वासुत्वृहित्त्वमातोषासोमःपुरोजानदंवात्सपृ
सोमःसैन्धुक्षितमग्निंवस्त्वतुर्थः ॥ ४

प्रियमिमंवितंजुषस्वापशीशाकलवाशौंड्वाणमान-
वानूपवाश्वाम्ने यानियत्सोशवन्तानिव्यपृशुहुँग्लंप्राणाव-
नक्रोशेजसावितपार्थैस्यत्यमिन्दुरातेसञ्जयमिन्द्रासिलम
सामहासिलमिन्द्रावृधीयक्रौञ्चे पञ्चमः ॥ ५

एतास्वेववयंत्वृज्यौत्याोरन्ध्रेस्वारैडेजजिद्धत्वसाम-
गोष्ठसुत्य॰हवह्नेव्यृरेवन्तीयम्परिस्वावैदन्वतानिष्टती-
याव्यसत्तुर्यानिससुतंवोदीर्घकाश्वौसोमागौरीमधुश्चुन्नि-
धनेलथाक्रौस्वेवाङ्निधनसैडैस्नौष्ठमयापवास्नेमूर्द्धःप्रवो-
धौपीवृस्वपुले षष्ठः ॥ ६

वृषातनिपर्शौङ्क्रूष्टीयानिपुनानवतरगौङ्गवया-
स्थानिष्ठासुप्रवदशिनिधनंवैखानसानियत्तेसोध्वमेषस्य
शार्ङ्गरंप्लुवःसखापुरोवितक्रौञ्चवाहविषंयेसोजरात्रा-
त्समालेवन्तःसोम्रवसंयदिवौङ्कमध्वयौरूपे सप्तमः ॥ ७

एतास्वेवाश्रुसामोर्मिलटलसापालस्वान्यभिसोद्धि-
हिङ्कपार्थहन्मगतहाराच्छिद्राणिप्रहिन्मन्वादुकथमुद्-

वङ्कर्त्तांयद्दिनैपातिथसुभयंवैयञ्चंयुषक्सुरूपाद्यभासका-
च्चीवतासितान्यष्टमः ॥ ८

द्युम्नमैषिरंप्राणानैतमभीनोवितकौत्सश्रुद्वाक्रौञ्च-
रयिष्ठोद्दलानिश्वासुधर्मंहिन्वविशीयएसास्सुशनसांवर्त्त-
साहतानिजिघ्रतद्वत्यदारसुरूपोत्तरएहरिश्रीनिधनसैम्यु
वाभ्रवेडानाएसंवारऋषभश्चेति नवमः ॥ ९

तोषिंपृष्ठकौल्मपुष्पद्वैर्घवैयश्वाद्याभीशवानिश्रीण-
न्तोवासिष्ठमसासामराजएसासुश्रायन्तीयंयतःसमतंत्व
एसोमाश्वसूक्तशाम्मदावचीनेर्डविष्कृतानित्वस्यर्षुंपवस्त
मनसंपरित्यंश्रितजिहवद्विष्ठीयानि दशमः ॥ १०

एताश्वेवासितसाध्रुपाराणिस्वासुविधर्मोपोषुश्रुध्य-
एसासवैश्ववाहकाकुभेवाएशीयान्युच्चाजिगाभीकेपुनोत्से-
धन्नीयनिडिधान्याजावितंमाचित्तिथमुदुत्यंवर्त्तोच्छकु-
लीयंपर्पूषुश्यावागवेधत्वहविषंवाङ्निधनमेकादशसूर्य-
स्याग्निंवाजजिद्दे व्ये दशरात्रः ॥ ११

वृषाश्चीपुनामस्तमुरसःप्लवःप्लवंद्वैर्घंगकापार्थंसा-
चिद्वत्तोयस्तेजराच्छसुद्मानंपुरःक्रौञ्चंप्रोकावमग्निंवःस
वापसोमाश्वंप्रसोमदेपजएसासुत्रत्त:पवतेद्मानकाशी
तेपसुवितमाजाभ्योकोनिधनएसवीरोदलंप्रसुन्वासाग्ने
प्रथमः ॥ १२

वृषाप्मतयैात्नोत्तरेतोषिञ्छन्दसस्तृचोऽडमायास्य-
तृचेश्रीणान्तस्त्रिणिधनंवृषाशोपार्थमभिप्रवर्त्तःशंकुविते-
पवस्वायम्पूषाभ्रामहीविश्वादृ(ँ)ष्टोत्तरमुच्चाद्रूपमभिसो-
रोरवंपृ्हिन्वाग्नेयमात्वावर्त्तःस्वासुच्चुल्लकवाचेसखाद्मान-
दासेसुताम्भी द्वितीयः ॥ १३

पविराजंपवस्वादारतोषिंपृश्नेत्वास्यांतृचेभीशवो-
त्तरंयैाधाश्रीणमुहुवाश्वस्यसि(ँ)योरावर्त्तःस्वारवैास्वाद्य-
सुद्मानेपुरस्त्वाष्ट्राद्दे(ँ)ङ(ँ)स्वासुलोशाद्येङ्शुद्धीयेश्वषांस-
न्तन्यभिसोमानावानूपवाम्नाणयभितिसम्यायशावर्त्तौ-
सागैाषूक्तंप्राणाद्मानै तृतीयः ॥ १४

एतास्वेवदासंपवस्ववारयिष्ठमसालैाशोत्तरंयजि(ँ)
साध्यमिंद्राश्वसूक्तंस्तृज्यमतन्त्रिणिधनायास्येसाक(ँ)सि-
(ँ)पिबावर्त्तःपरि(ँ)वैध्मवाहन्तं वर्चिद्मानकाशीतेस्वासु-
रुताम्भे नुप्रसोर्चिवर्त्तांत्सःप्रत्नं वर्त्तलेये तथाभिसोमरस-
परिधीन्दुहेति च चतुर्थः ॥ १५

हाउनित्वंप्रतेलैाशाद्यंमन्द्रदुग्धावर्त्त लेयेइन्दुःस-
म्पापवस्वत्वाष्ट्रीद्विरभ्यस्तङ्गोविल्लौशोत्तरम्प्रवमाहृषोवर्त्त
लेयेश्वयापवासिष्ठंज्योतिर्मरुतामुच्चासत्वापुनावर्त्तौभि-
वायुम्पाराथंपुरोमधुश्चुत्नीर्यंबृहदाग्ने यमभिसोगैाङ्गवंप्रहि
न्वायैाधास्वादिच्चुष्टम्भं पञ्चमः ॥ १६

आजातममभ्यैडङ्घावन्तोषिमतंयश्रोसितंह्रषाया-
ममैडङ्घत्वावर्त्त स्तिस्रोहितꣳसहत्वाष्ट्रास्यसन्नातवोत्से-
धोदुहापृश्निशिशुम्पार्थन्दुग्मम्प्राणासफश्रुध्येकर्चाविंदु-
र्निषेधोधर्त्ताकावंक्रतुꣳष्म्मꣳसखापौष्कलंकतुꣳश्यैतम-
च्छश्रुध्ये षष्ठम् ॥ १७

क्रतुन्धसंपवतेपैाष्कलमस्यामहीतोषिलेयम्च्ययꣳ
सोपार्थꣳखानोहितम्पवसन्नापर्यूदेव्यमिंदुर्व्येवापरिप्रध-
वारꣳसूर्य्यस्यक्रावंटचेपवमापौरुमीढम्मन्द्रनवाद्यम्परि
धीनिवमभिसोवाजमुत्सःसिष्ठं यद्वापमेनमितिप्रसोगव-
शुद्धीयएकर्चाःक्रतुम्मीढन्तवर्चिश्रुध्ये सप्तमः ॥ १८

क्रतुम्मानवाद्यं प्राणापैाष्कलंक्रतुञ्जनिवꣳसोमः-
श्रुध्यं क्रतुं वाजमभिसोतिथंतोषिदुक्थंयस्तेसोमसोमा-
ध्यर्धेडमदब्धःसुमाग्डवमस्यजरातोषिरवंभ्वे देवानिह-
व: संवत्सरः ॥ १९

प्रतिनानदमानोविश्वाश्यै तम्पुरोदलꣳखादोःश्यै-
तम्पवस्वेडानांकर्चःप्रलंयैाधाशिशुन्दे व्यङ्क्याखारम्पर्स्
म्परिप्रधन्वसफमेकस्यामुच्चाखारसैापर्स् शाक्वरेपुनाष्टं-
भलेयेश्रायभरन्तरोवारमच्छैकस्यांपुरस्तृचेयास्यमैडꣳ-
खानोजरावर्स् मिषंपुनावषट्कर्चे प्रथमः ॥ २०

टवेमच्छौपगवन्निषेधःश्रायमयापार्श्वमिन्द्रामहीक-
र्ण्वाःपवस्वमलेयंटचेत्वेसोयैधादैर्घंश्वाद्यैतानमेन्द्‌मा-
कृतꣳस्वादिजरानदंवश्रुध्यन्देवोदर्शिर्ज्ञीयमुत्तेमहीम--
न्द्रजरापाहिरवंटचेकर्चैदैर्घंविश्वस्मात्समन्तन्त्वावजय
सिनश्चौशने द्वितीयः ॥ २१

कयातेदेव्यग्नआयाधससच्छलेयमदासꣳहितंभ-
द्रोग्नेवाजसफ्फलेकर्चौतृचेश्रुध्यं विशोवाश्वसृचितृचे-
श्वीगवज्ञीयेसमिद्धंर्ज्ञीयकावमुपत्वावारमुन्वे षन्तोकज-
रास्वासुवषट्प्रसोटचेगौङ्गवꣳशग्धूग्हारत्वङ्कौत्समलाशु-
सदच्युतःकर्चे तृतीयः ॥ २२

प्रधसच्चाप्रसुवाश्वंकर्चावौदलंतृचेप्रदैर्ज्ञीयꣳस्वासु-
दैर्घꣳशग्धूग्वर्तःस्वादिष्कृतमसाश्मतंयस्ते हितमयंपूवा-
श्वंविपश्चितोभार्गवꣳस्वासुयौक्तस्तुचंप्रसुन्वागौतमंतृचे--
वृषाजिगस्वारपक्षौंपुनादैर्घंयस्ते सुरूपोत्तरंतूꣳहिशंकु-
सुज्ञापवस्वदेवासितमयंपूषेति चतुर्थः ॥ २३

उच्चार्षभपूक्तेभिसोमोत्से धःस्वानोवारंप्राणास्त्रुध्यं-
पुरोनिषेधःप्रधन्ववर्ष्यौजिघ्नमहीसाकम्पार्थमिमाउत्वा-
शैग्रतंयसग्लेयंपवमासꣳहितमासोगोमन्नःसफश्रुध्ये भी-
नोवाश्व्याबागवेज्ञतेकावन्तोषिदꣳष्ट्रोत्तरमभित्वाकण्वर-
मानोदोविशीयं पञ्चमः ॥ २४

परित्यꣳश्यवागवेपवित्वं कावꣳस्वादिमै।त्वं त्मीयत्तु-
विशीयंल्वन्नस्त्विवारमुच्चारुवारसैन्धुत्वितं ताषिंवरुणसा-
मयस्ते काच्यरच्छादासंपुरोवाभ्रवैतहव्यसोमसामत्वासा-
न्यग्ने त्वꣳसत्वाभिसोदोविशीयꣳस्वासुवारंप्रतूर्तिंषुवत्त-
त्वाम्रषभस्तोष्युत्सेधे षष्ठः ॥ २५

उत्सेध एवश्रीणामच्छविशीयमयंपूनिषेधइन्द्रपुष्पं-
च्यावनमेकस्याम्पवस्वतंवःपुरोजनित्रेपुनातिथंतंवशुद्धा-
पदान्तꣳस्वादिमच्छगौषूक्ताख्यसूक्तएकर्चौयत्रैह्य पुतन्तेशु-
धीतिचत्वाराणिपिबातमेधनिषेधावृष्यापर्श मैड़न्दुहा-
समन्तं पङ्क्त्यगंपुनावरुसाम्नि सप्तमः ॥ २६

तवाहम्मतजयेरेवतीर्दिव्यꣳस्वासुसत्वाभरन्तवत्यत्पु
रोजागतꣳसोमसामयदभित्यमितिपत्नस्याहौंद्रस्यर्श मैडं
वसुरुचःसताधयदोविशीयंप्रत्नमुत्से धस्तदिदाभ्यै तꣳर-
त्नःसुरूपोत्तरꣳसुमन्मावारंपुनावैयश्चर्चोवषड्न्तमुत्सो
यस्ते सत्वापवस्वकाशीचीनेड़मेकाहाः ॥ २७ ॥

॥ इति प्रथमः प्रपाठकः ॥

पन्यङ्क्चमात्वाविदꣳष्ट्रम्पूर्वम्परि स्वासुरूपोत्तरꣳस्वासु-
हविषजरामागौयवाणीदंवाम्यवस्वसाकमृच्यभिसोतंवा
जनित्वै च्छजराप्रसोजरासोमसामरोहितकूलीयानिप्र-
सोच्चारान्तं जयमुहे स्वारम्यस्य मच्छाच्चारमभिपिस्वानस-
मस्यपृलाशुमागौयवे प्रथमः ॥ १

एतास्वे वमित्रटतसाकलम्बानग्रभिसोदैर्घंपृहिनु-
हिहिङ्कादेव्यमेवमेवतनिहन्मेमोषुत्वापार्श्वमस्तासन्तनि-
यस्ते सुरूपाव्यभासासितान्यभिघुवाचःसखातृचेशैात्कमि
न्द्रासितकौत्सशुद्धाकौञ्चरयिष्ठानि द्वितीयः ॥ २

इन्द्रापविश्रीयेस्वासुविशीयमुच्चासुरूपोत्तरादारसं-
च्चारास्तोषिंपृश्नितथाश्रीणꣳसानोहाविष्मशाम्मदावची-
नेडविष्कृतानग्रयंपूर्श्रीयहिष्ठीयेधर्ताश्रीयमग्रसुपारमयंपू
क्रौञ्चाद्यङ्कस्तन्दे व्यन्तिस्नःसैधुच्चिते तृतीयः ॥ ३

सुतात्वाष्ट्रीस्वारेपुनापृश्न्याभीशवोत्तरेसिष्ठमयमे-
दुदेव्यꣳस्वानोगैाषूक्तं पाणावारन्दच्चसासत्वापरिप्रियाज
मूर्मिणाक्रोशन्तोषिंवाम्नमानवानूपानिश्रीणाम्ने यꣳसो-
माःश्यावागवनिषेधाःपवस्वशग्रावागवे चतुर्थः ॥ ४

एतास्वे वाकूपारꣳसोमाःक्रौञ्चायꣳसुतात्वाष्ट्रूग्द्वेडꣳ-
पुरःशुद्धापदान्तमसाच्चितमैडन्तोषिंयैाधाद्वैगतेश्रीहन्मनं
पुरःपारसाध्रेपवस्ववाचे यंपरिप्रिषूक्तमेकसांप्रत्यस्रौ वित

मिन्द्राच्युतम्प्रसुदानोत्तरम्त्यभिप्रिणीयन्नमस्ते जराव-
षाणीयं स्वासुभरमेनामिन्द्रे पञ्चमः ॥ ५

पवस्वद्वाष्ट्रोपदीक्षयन्तयामभिसोदंष्ट्रोत्तरम्चिचि
त्वचेभोशवोत्तरंस्वःपृष्ठं हिन्वावयमेसिध्मपुरःसुल्लेय-
न्त्वमिन्द्रद्विहिङ्कादेव्यम्प्राणावार्शम्पवस्त्रीयंबृहदाग्नेयन्न
रस्तोदःश्रीणाम्पिबापृष्ठमध्वर्य्यौपर्सौड़कूलोयेतवहन्मगत
गौङ्गवयास्यानिस्वासुवाराहवाशे षष्ठः ॥ ६

पवस्वदेचितितमैड़ङ्गामन्नसेतम्पुरःक्रौञ्चायगौतमं
प्रोसारथ्यातेस्त्रैग्मतंहाउहुवाद्रश्गुसिष्ठम्परित्यमूर्द्ध-
ड़्लाष्ट्रोणीयेपुनामदृगकाणवं भौनोनिषेधसाध्रणीयानि-
स्तोमम्मन्तपुनासोमसामावेयम्पुरःशिशुमुहुवायिसिष्ठं-
कौत्समभीनःस्वारंधर्तांशार्गं सप्तमः ॥ ७

हाउहुवाश्वक्रान्वासिष्ठंपरित्यमासितोत्तरमिन्द्रा-
पारमभ्यस्तङ्कर्वावसायासमैडमाजागशानम्परिप्रधन्व-
वाजजिद्हौनाः ॥ ८

विशोवितन्त्यचितंवस्तृचेश्रुध्यंयजिष्ठमैधमजिघ्नपर्सैं-
ड़कूलीयसन्तानिनिपुनादुक्थम्पवपानोजराश्रवसेभीनः
कार्त्तंप्रसोमार्गीप्रसोमदेगतहन्महारायणानिस्वादिका-

च्चीभासे प्रसुशुद्धापदान्तं वृषास्तुरूपोत्तरर्षभे पुनापृष्ठे
प्रथमः ॥ ९

एतास्वेवकौल्मलैषस्यशंकुकारवमाष्कृतमभिसोपु-
नावाशमैाशनꣳसाकमिमाधसङ्गोमत्यैाष्कलमुभयंवाश्न
न्वाभिमानवोत्तरङ्क्ईङ्काखवमाष्कृतमभिशग्धिमानवा-
द्यमात्वाद्दाजंयोरानित्नंयशस्त्वमिन्द्राग्निमूर्सत्वापिबाज-
सवन्तीः कारवमामन्द्रैरभिनिधनंयथामनाज्यन्त्वमङ्गमीढे
द्वितीयः ॥ १०

आत्वेन्द्रसुतोद्दꣳशीयंप्रतिष्यैषोजराश्रुध्यमुषस्ता-
श्विप्रतुज्योतिषंयत्प्रगायतेत्यवोद्दूद्माभाद्दूत्यैाशनान्या
शूचात्वꣳसत्राश्रुध्यम्पवस्वाभिप्रिसिष्ठंयदेषप्रकोशद्दूतिज
नसैरताबोकावानितोषिङ्कखवरन्तन्तेमभरम्पुनाच्छन्दस
मेकस्यां तृतीयः ॥ ११

तवाहंपृश्नेरकस्यामꣳसामागौंगोमानाग्नेयंपङ्क्त्याꣳ-
सन्तनींद्रोगोष्ठःपुनापङ्क्त्यान्तन्वामगौंवयङ्कसन्तनिप्र-
हिन्वाच्छिद्रमभीनस्त्वाष्ट्रेरकस्यांत्तान्तꣳहिन्वन्तीडाना-
मुपोचीनेडमुत्सोवितङ्ग्विद्धीयंपत्रमाकखवम्प्रसोमाभी
कपर्वैडेप्रसोद्दिहिङ्कादेव्यꣳस्वादिशवंप्रसुवैश्वामित्रस्वार
कौत्से चतुर्थः ॥ १२

एतास्वेवैतच्चयंवृषाहरिश्रीयस्ते शाम्मदावाश्वसूक्तान्ययंपूकौत्समैडमुच्चामितटतसाकलम्बान्यौशनवैरूपेतिस्रःसुतासाश्वावाश्वेतवाहम्पुष्पदुक्थमाण्डवानिविदावश्वितियस्यनिधनंपरिप्रियामार्गीयवमीनिधनम्पुरःशुद्धीयमैडमुष्वावैषावाद्ये पञ्चमः ।। १३

उष्वावैषावंद्वितीयमेकस्यांतृचेस्तुचमसासोमसामाध्यर्द्धेडंपवस्ववासदस्यवंपरित्यंवाङ्निधनंक्रौञ्चम्पर्यूवितमृच्योकोर्णिहमजीमृज्यकाववरमेकस्यांतृचेपुष्पोत्तरंहृश्वाषूक्तकलिपुनोभयतस्तोभङ्गौतमंपुरस्ताष्ठीवारान्तमाकारान्तञ्चोच्चामार्गीपुनाद्विहिङ्कादेव्यगतपुष्पाण्ययम्पूमधुस्युद्यश्रोजि पुष्पोत्तरे षष्ठः वाद्याश्वसूक्त मेकस्याꣳसवाणि ।। १४

प्रत्नमुद्वदुपशिचासफमिन्द्रेविश्वालियन्तंवोभरन्त्वमङ्गक्षुभंत्ररिव:साहीयमुत्सोभिनिधनंकावमेषब्रह्मालियमाष्कृततंवोवयमुत्वालियमुपदविपवह्नीयानिसुशिचासफष्कलेकचौंमत्यलेयंतृचेस्वामुधससुत्तरयो:कुवात्वालेयंपरिप्रधन्वपौष्कलमेकस्याꣳस्वादिकौत्समैडे प्रथमः ।। १५

सखाक्रौञ्चमयस्पृषितियद्वितीयमेवाभरसिन्द्रं विश्वामैधधमिन्द्रायाहिधियेगायन्तिलेयमायःपुरमग्नेतक मश्वमेनाप्रत्युङ्माउवामितिचैकैकश्चिन्वारदेव्यस्तुध्यानिसन्धावग्नेविवस्वेति च तानि यज्ञामहावैश्वामित्रे द्वितीयः ॥ १६

एतास्वेवदैर्घमचिक्रहितम्पवस्ववषट्कार्चःपुरोक्लीयमुत्तरेगायत्र्यांविधुंवषट्त्रयमक्रिमित्तेवितेश्रायन्तीयंपव स्वाम्बीपवस्वसोमोत्सोद्यौतानमेकर्चाःप्रायश्चित्तानि॥ १७

अभित्वाकरावरनुत्तरेककुभाविन्दुन्नैाधसःश्यैतेसनः कौत्समैडमुत्सोधसम्पुरस्तृचेपारमभ्यस्तं यत्पुरउक्सःश्यैतेपुरोधसं कर्चास्तं वानैाधसःश्यैतमभिप्रवःश्यैतनैाधसमभित्वालामिन्द्विवारेतंवोदाभिप्रवःक्रौंचेभित्वापूर्वकरावरं त्वामिलॅघ्नोहि करावल्हद्यद्यायदि महावैष्टम्भे प्रथमः ॥ १८

पिबास्तुधीतिचतमसमेतास्वे वमरायॅरेवाॅइन्द्रावारंमसोप्रसुकरावतरंपुनापूषाकरावल्हहदभिसोसुतासोष्टम्भेतवपुरङ्गतितमसमेतास्वे वमरायमिन्द्रांयेन्दोवारमिममासितमसालाष्ट्रीयदिन्द्रविप्रियंपुराम्भिन्दुर्म्महावैश्वामित्रे द्वितीयः ॥ १९

गायन्तिसाम्यासंत्वाष्टेंद्रयाक्रौंचाद्यमिमसागायमे-न्द्रयाचवितानिदेवःकखरंय न्ताकखद्धहत्पुरोवात्सप्र-श्चनिताच्चीयत्वासुमरायन्त्व द्याशुद्धासुष्वापारङ्कच्चौ सोमाःपवन्तच्चीयत्वासुवाराघजनिताश्यावाश्वंप्रतेशे-खण्डिनङ्गोविच्छेनस्तन्त्वाहवद्दे व्यत्र रसं मार्गीयवै तृतीयः ॥ २०

अयापवावार्वतुरश्चोतिर्ज्जागतंवरूणसामप्रवत्प्र-काशिशुमुद्दट्क्रांत्सामराजंप्रकारथीयशिशुश्चोतिषम क्राञ्चोतिषवात्सप्रेश्रृङ्गमाजापुनायामैत्वगौराङ्गिरसत्र सोमीयमेतमुत्यमितिमौवाराहमुद्दवा यिधर्त्ताद्वाउद्दवा-असाविसिष्ठे ग्रोपामौवधत्र्ताक्रन्दे साविसिमानान्निषेधे चतुर्थः ॥ २१

प्रवाजिबोधीयमदश्यौत्वाभिनिधनङ्काखमग्नआ-द्वन्द्रबणमनैपातिथान्यच्छाश्रायन्तीयं क्षुद्राः आयन्तीयं क्षुद्राः ॥ २२

(इति बृहत्-स्तोत्रियाधिकारः)

स्वासुतरमेनाप्रत्युद्गमाउवामितिचत्वामिद्धृहदभि-
सोन्तरिक्षंयद्द्यावैरूपम्पविनमरिष्टपवस्वदाथर्वणंपिबाम-
हावैराजमर्षायएवमिन्द्रोह्लहद्गिररश्मे स्वादोर्वाजीयंप-
वस्ववार्षभाष्टेडाविंद्रायेन्दोरेवत्य:सुरूपक्तषभउभेयच्छेत्र
मद्गमानुभद्रं यस्तेग्नेरर्क:पवस्वदेशिरामर्कस्तोषिस्थान--
सङ्कृतिभर्गयशाꣳसि सुषासाविसोतमसोर्क: कयातरं
दशरात्रः ॥ २३

पुनातरमभिसोञ्जोरूपन्तोष्यांवर्णमर्षापत्यशाक्वरे-
यग्नायज्ञाचतरम्मत्स्यह्लहत्प्रत्यस्मैतरंयज्ञाप्रसुस्वरञ्चतुर्थं
मत्स्ययंपूषाद्वितीयमेतास्व वत्तृतीयंप्रत्यस्मैसुतास:प्रथम-
स्यप्रत्नांभ्राजविभ्राट्तववर्णमेन्द्रमिद्दे श्रायन्त:कीर्त्तमि-
न्द्रक्रपुर:श्रायविकर्णंपरिस्वानश्राभ्राजमुच्चाग्ने वृं तंम् -
द्वांपुरोभासेतवाहन्तरम्पुरोजिह्लहत्परीतस्तरꣳरेवतीरे-
वत्यस्वमग्ने बृहदभिसोपरीतोवार्क जम्भाद्योत्तरेतद्दिदा-
विकराजनदेव्येपरिस्वानःशिरामर्कोग्ने ततषड्चेलान्द-
ꣳसंवत्सरः ॥ २४

पुरोवर्णꣳस्वादिशिरामर्कोर्षायस्तेवार्षाहरेभित्वा-
त्वामित्तरह्लहद्विपदोत्तरेपर्यूषुनदꣳसꣳस्तोभःपुनासप्तह-
मेकस्यांधर्त्तादीर्घतमसोर्कोयंपूभर्ग:स्वासुवत्सामाभेम-

बृहद्यस्ते त्वाशिरामर्कः किमिबृहत्पवतेयस्तेबलभिदेक-
ञ्चौत्वमिन्द्रयशःपुरोजिभर्गःपुनास्थानꣳस्वासुसप्तहलेत्र--
सामनीपुरइन्दुरेकर्चं एकाहाः ॥ २५

आज्यदोहानिप्रतिलोमानिप्रसुन्वायꣳसोतिस्रोवा
चइतिश्रायक्तितिःस्वासुरश्ममश्वव्रतमभिवाजीव्याहृति-
सामानिपञ्चभूर्भुवःस्वःसत्यंपुरुषइतिस्वर्शिधनेचायंपूत
मसःऋचंःश्रीणास्थानन्तिस्रोग्ने रर्कःपरिप्रधन्वदीर्घत--
मसोर्क्कौभित्वावृषभतरंयज्ञाबृहदभिप्रवृषापवित्रंधत्ता
इतिस्तोभाद्विरिडचतुरिडषडिडाष्टेडानिपुनावर्णपरि-
प्रियास्त्वाशिरामर्कःसुताबृहत्पुरोवार्कजम्भाद्ग्रामासो-
मान्तरिक्षमभिसोवर्णमग्निंवोवाजीयꣳस्वादाग्नेरर्क्कौद्वियँ-
दीर्घतमसोर्कःपरिस्वापयोहीनाः ॥ २६

माभेमतरमग्निन्तम्महेनःप्रतिवाजीयान्यभिप्रिया-
दीर्घतमसोर्कउत्सोभर्गःपरिधीनाथर्वणꣳश्रीणन्तस्तम--
सःपरित्यꣳसंक्रत्येकर्चाःपुनायशःपुरोजम्भोत्तरमुत्सःसꣳ-
सर्पउत्तमोभिप्रवाद्यंपुरोद्वितीयꣳसत्राणि ॥ २७

तंवोवर्णमभिप्रवर्णंवृषाचैकवृषंचपुनाश्विनोव्रँत-
म्पुरउत्तमेतास्वेवापांव्रतेपुनागवांव्रतꣳस्वादुत्तरमेना-

प्रत्युद्गमाउवामग्ने विवस्वच्चित्कद्रुकेषुबृहदग्ने विवस्वत्तरंप्रत्नꣳसखा तौरश्रवसे प्रतिलोमे याम मायज्ञैःप्रायश्चित्तानि ॥ २८

यत्रेन्द्रुरेकार्चःसखायोधाबृहद्भिःसखाभिःपरितन्दुर्यौधाद्वौद्वौपादौद्विरभ्यस्येत्पुनातरमुत्सःप्रत्नंद्विरभ्यस्तमभित्वातरबृहत्त्वामिद्बृहत्तरन्त्वामित्वꣳद्योहिजम्भꣳस्वासुहृस्वायदिन्द्रयेतिचयद्यायदिन्द्रयान्तरिक्षेस्वासुषभःश्रुधीहवमितिचविकप्रोषुवस्मातीषङ्गोयदिन्द्रेद्रायाहिपुनापूषाजम्भादामभिसोहृस्वासुतासोहृस्वान्तरिक्षेतवपुरङ्गतिवैराजऋषभꣳसोमउष्वापवस्ववत्सास्तयोरेवातीषङ्गःप्रसोप्रसुतरंपुनापूषाबृहदभिसुतासोरूपेतवपुरङ्गतिमहावैराजम्परिस्वारेवत्योभिसोसुतातरन्तवबृहत्सोमउष्वापवस्वतरंमृज्यसोमाबृहत्पवस्वश्रेयःसुता--सोरिष्टमग्नआयाह्यन्तरिक्षꣳहोतारंवत्साश्रक्रान्तमसः-सोमउष्वापवस्वसिमाःक्षुद्रा इति क्षुद्रा इति ॥ २९ ॥

(इति लघु-स्तोत्रियाधिकारः)

॥ इति द्वितीयः प्रपाठकः ॥

तालव्यमायि यद्वृद्धमवृद्धं प्रकृत्येद्भऐइत्येतान्यायिप्राप्तमोद्भ भवति हिशब्दएवाहिसौभरामहीयवयोरेहोमिहवहैवोदासे त्वंहिकौत्समएकारस्य प्रकृतिप्राप्त ऐ भवतीहवहै वोदासे पुनश्चावृद्धमप्यायि भवतोशानं वृतरेस्तावे पवंते क्रौञ्चे वसोनिरेकेभिनिधने यद्वृद्धं प्रकृतिर्भवति तस्य ग्रहणं निधनेहीषोस्यंसर्वत्रनजिनंवृषातनिनिशिशुं तिस्रोहितेचविप्रलपीजयेभिर्नत्वेसोमजयेनिमायस्तेहितेममद्रिपरीतायां मानजययोर्विषन्द्रिद्रोमसन्तनिनि ॥ १

यौधादेवस्तावेशनेषीद इन्दुः ऋषिः येना देव्येखीनां धसेभि षुधे रिन्न संहितेयोनिं द्रोणेसर्वंच पर्षि सफेपीतास्तावे क्रमीत नाए घ्कालेताद्भसद्भ विदे इन्द्रः अप्सुजित्सर्वत्रनान्तोद्दएशीयशुध्यजरावोधीयेषु वाभ्रवे जि तौ मयि घजि योहवाद्दीसर्वत्रनकार्त्तयशोपद्रवयास्यपेधसोमसामसाभ्रेषु श्वाची धीगवे घजि नस्तावे अभि कावेधिर तार्त्ती अधित्ततीयायां च्चौयेपप्रीुंसर्वत्र सिषं दाशे जेषु नामैंमहै दभिः व्याभिः तिशू ह्याणि काणू तवेत यन्ति प्रथमः॥ २

कद्येसुते रात्रिदासेषि रात्रिपारेकूर्मिम् आर्षभेमाकौं गारेभयिन् ननि गोभिः त्वास्मिन् सौमेधे-

तयेह्वेनिधनयोः कौत्सेमेषु मनि योधाद्देव सफेषि ऐडयास्ये षसि द्दसि नोद्गोथादै देवो द्वितीयः ॥ ३

सिष्ठे षिपृ थिवीं षिम एषि श्यैतेत्राणि छन्दसेग-हिनान्त्येति वे ष्मतेवेपूर्वं स्याभिः नधे शंकुनिमहि क्रौञ्चेभि यामेपूर्वौ द्दष्ट्रेपतिंद्वितीयं अभि ष्टभ्मे द्दे वेवित्सर्वेत्रनामरूपमितृविलम्बेषु मद्गेमनो संक्रोशेचइं वह्निः तिंवृमनो धेन वस्ति मदे ष्टभ्मे खव्दी स्वेसति लौहेतिक यन्तोस्तृतीयः ॥ ४

शौक्तेश्रिये त्वाष्ट्रीसख्वे प्रमतान्वे द्युम्नो भवौ भिः हारिवर्णेसहिं द्दिथ पत्नीः रश्मेपूर्धि असि प्युषीं द्दष्टेवे धनि शवेवेपूर्वं परि तेद्दि साहीयेविप्रभुवे शाकीमुरों ओजि कर्णं श्विनः यद्दि पृश्निनिस्यद्विस्ता-वेऔशायवेयाती माही हल्के वद्धी नविस्तावे षादी-येवाती अग्ने अभि वात्सप्रवते द्दवीः एति राणि सैम्धुक्षितेनम्रे चतुर्थः ॥ ५

प्रियद्रुद्रा ज्येष्ठं हरी बृवी त्सुरिन्द वितेहेश ध्यृष्वेदभिः येव पेगो वाम्नेमन्दी यानिध्यृष्वेतान्यग्ने-स्त्रिणिधनेमन्दोच शेशयूषि पतोपूर्वं नापि वने श्यतिः क्रोशेप्रिया त्रीणि तेसर्वेवविन्नत्तमङ्कारप्रत्ययं नमर्स्ते ज्यन्ते हितेपवतेदाशस्पत्ये पार्थेजभिसर्वेत दाश-

स्यत्येराति साखी सञ्जयेद्यवि मिवेकृते चिते स्त्रवे असिपूर्वं महामिवेगहि हरी क्रौञ्चे चैावि सर्वत्र पञ्चमः ॥ ६

रयिꣳरंध्रे न्वसिरयिꣳरुणसाम्नि भिर्वन्तीये विश्वे असिनिधनेदन्वतिप्रथमे परि त्वेसोसर्वत्र तुवे सःपी- द्वितीये कविः तुवे श्ववे स सःपी असित्वतीये दीर्घइन्द्रः आये नमि कार्ण्श्रवसड्व वितेरेसर्वत्र क्रौञ्चेधीयाः श्रैाष्टे सूनि जूनि सूनि गूर्टे ष्ठदी षष्ठः ॥ ६

तनिधर्णकुलीयेषुन्वे वा णुतरेषसिपूर्वं यास्ये षसि दसि प्रिय षसि अभ्यं तवणे सुते रेके स्वब्दी कर्णु दर्षि खानसेसहिमभ्यासे माने मैाच्चेस्याभिः शार्क्करड्वोद्गीथे वर्मा प्लुवेनी षी समीः अभि यवी कार्त्त यशेतीवो यित्वे हविषेयाहि वात्सेवाहि वी- ड्कि स्ति वी वीं रूपेपवि तवे इन्दो पीयूसर्वत्र सप्तमः ॥ ७

हौन्द्रातवेयवे पविटते तवेपर्णे पाश्वे भि हन्मग- तयोर्मनी हदुक्थेभिये उद्दङ्गार्गवेभ्ने वैपेन्द्रभिः नवे वेश्नेनस्तावेष्टमः ॥ ८

ऐषिरदीद्वितीय दैपूर्वं श्यतिः स्वरी धर्मणि- तादे धर्त्तासि विशावीन्दु मही नीया इति शनेथि

तौं ये मारुतेकवि: यसी: भवेस्तोवे संचारेनावी नवम: ॥ १०

भीशवेसुते सामराजेषि षिमा यासि श्रायन्ती-येनदीपरिकृष्टं प्रतिप्रथमायां मन्तेषोविनोद्गीथे स्यासि काशतेवाजित् निहवेरेषासर्वेव दशम: ॥ ११

सितेयोदेसर्वेच मदे नरे सर्वत्र विधर्मणिजन्ति वैककुभेविवा मामी व८शीयेमी रे शामो जिगेतेजा श्राभीकेदद्दे च्यीयेषसिपूर्वं वत्तं तेरम धीतं रोहित-पूर्वसाई स्यचे वाश्वेनाई गाजो जिये अभि धीगवे परि नाई मद्दे अभिसौहपर्य्याभ्यासे देव्येप्रेङ्खो दशरात्र: ॥ १२

पार्थे वक्ति ति तिसा जूतिं मते बोधीयेस्याभि: कावेभि: धे साहीयेनध्वे श्व महि वर्ते भिन्नं दस्तेत्र-सर्वत्रविवृत्तमकारप्रत्ययम्प्रथम: ॥ १३

हिन्वे ष्मते हविर्ट्से यानिसिष्टेतानिपार्थे वर्ते हस्वे स्तावेणि शङ्कुतुनिमहि द८षट्रे पतिं रूपेतेजा अग्नेस्त्रिणिधनेभिये येष्ठौहितेष्टस्मे दासेसमी धीगवे वेपूर्वं द्वितीय: ॥ १४

सामराजेसङ्गत वन्ति पवि धिरा मोरे भीशवे-सुते उद्दुवायिसिषठेहेम भि:सं पर्ये सिरे मन्ति चैत:

पूर्वं अर्णायवेकविः शुचिः येचोत्तरे लोशेनाति शुद्धिये-
द्धे न शीर्वान् गहिरिपिं मह्नि रयिं धाश्वेभि स्नेष्टपे
सम्पायांवाणीः वारी नानि व्यूतिः चीने तृतीयः॥१५

दासेचीणि रयिष्टोर्मणिपूर्वं द्वाभ्यालोशेराजे
साध्येश्रेष्ट मन्तेवारे सिष्ठेनुत्वीः नच्चे धन्वे स्त्रिया भिः-
स चते सुमे णांति वत्तेंदिये मरुताम्येनैामनि यदि
नुषी वत्तेंदेव ग्विः सर्वत्रनाजावितच्चीययोर्जनकावे-
प्रसोतरयोश्च उत्सवत्तेंदेवश्चतुर्थः॥ १६

ह्वाउनितेवते तीनां द्वीः राणि कवी लोशेति-
मनीयन्ति रातिं वते वांस्वे रसेसिष्ठे नए स्तेह श्रेष्ठेच
यानि मरुता मिन्द्रि वत्तेंदेवस्तावे पार्थं युवीं धीज
रथे यूनि ष्रियं च्चीयेत्वेि पञ्चमः॥ १७

ऐडकावेबृहन्नधि सितेरयिं ऐडयामेमती सखी
वर्तेस्त्वद्री कण्वे सत्हितेहरिः पार्थेणे न ति द्वीः
कवी सफेदिटी कावेदभ्रे माहि ष्टम्भे मनिसर्वत्वन-
मीढे ष्कलेनिषी श्रिये यवी षष्ठः॥ १८

धसेते भी ष्कलेवते पार्थे याहि योजि ह्णि सूनि
याविट् सत्हितेसःपी वन्तीयइन्द्रा महे स्वपे काने-
न्द्रात् निक्तः मीठेज्योतिः सप्तमः॥ १९

ष्कलेधि तिं पतिं त्रित इदुकथेसुते संवत्सरः॥ २०

श्येतेसि ईशा यौधाद्सौसर्वतपूषायाञ्चनस्तोभे प्रत्यये यूथे स्वारेपर्स्रे खीनां सफइन्द्रा पूष्णो बोधीयेसः-पौ प्रथमः ॥ २१

पार्श्वे क्वभिःपूर्वं सीये लेयेपौत्वास्तावे नए यौधा-कुवे मह्दे तौंया द्यौतानेमई यवी याभिः ह्मानि दिवे-पूर्वं युगेमारुतएदु धाश्वसि महि श्रुधि आश्वी जन्ने बोधीयेयोनि त्त्रीयेसिचं प्रचे वह्नि अदर्शित्त्रीयेतानि त्यानि मन्तेद्वि यैाधामह्दे शनेदर्शि तीरुश ती सुभिः एवर्णे द्वितीयः ॥ २२

देव्येग्ने धसेष्मती बर्हिःरन्ति कैश अग्निं सं-हितेग्निः तृर्सिः अग्निः वाश्वेदूरी त्त्रीयेप्रियं दुरी परेत्त्रीयेकविं जसी समी यत्ते कावेकविं जसी दन्ती-येभिः हारायर्णेनिह कौल्मे स्वाणि तृतीयः ॥ २३

दलेल्के त्त्रीयेप्रदै त्यानि तानि वर्ते देव स्तावे ष्मतेदुक्ले सर्वत् संहितेस्थाभिः वाश्वे प्रियाः र्षणीः स्नुचेद्रेह्द द्रेस्वा जिगे हिन्वे सितेरयिश्चतुर्थः ॥ २४

षभेदृदे वन्तीयेकविः यानिवारेतानित्वरीषुक्रत्वे च यानिसिष्ठे तानिपार्थे लेयेयें तुभ्येत् ज्यते श्वस्मे सं-हिते ज्योतिः सफेदेवा कावेनक्री ज्योतिः णूतरइन्द्र-नोदृगीथे पञ्चमः ॥ २५

कावेसद्भत् मैाचेयोनि विशीयेवाजे वन्तीयेत्व-
भिरंत्ये रुणसाम्निसुते दासेस्थेत् वन्तीयेमोभिः वत्ते
याद्दी षष्ठः ॥ २६

षेधेरयि उत्तरेनित्रेभि एह्यूवारेदुभिः तंतेवारेषि
पत्नीः श्रुधीहवारेनत्री प्युषीं षेधेभि रुणसाम्निन्टभिः
सप्तमः ॥ २७

यौधापर्युंदगीथे देव्येरेव चित्यसी वारेरन्ती
गहि अभि साहीयेयस्ते काशी तनाए एकाहाः ॥२८॥

॥ इति तृतीयः प्रपाठकः ॥

कचेमाद्दो नारे जतिः स्वर्वन्निधनेपरि पृष्णि महे
पेयात् क्रात्वे प्रखेच वोधीयेशेय धियेमार्गीयवेकिने
जयेत्त्वामरान्ते देव वैखानसेप्रिया प्रथमः ॥ १

तनिन्यभि पार्श्वे गहि वाचःसाम्निदीद्वितीयं
देव वह्निस्तावे स्वरी शोक्तेश्रियं सितेसने मदे
द्वितीयः ॥ २

त्त्रीयेपरि नन्ति परेत्त्रीयेषि सद्भत् विशीये-
प्रियं सन्ति संत्तारेभूमि श्वानि षमतेसःपी धत्तांत्त्रीये
त्वीयो माद्दी देव्येयेद प्रिया तृतीयः ॥ ३

भीशवेसीद् न्टभिः यानिपाथे तानिसिषठे देव्य-

एदु साहीयेसन्दे बृहन्नारेमाही क्रोशेधीभिः प्राब्सुते धीगवषेधयोर्ह्रीयाश्चतुर्थः ॥ ४

च्येयेदेवे च्चीयेभिहतीयायां बोधीयेदेव संवे च्चीयेदीया पञ्चमः ॥ ५

त्वाष्ट्रीयवे भीशवेमनी सिष्ठेमथिः गहि वाशे प्रिया च्चीयेचीतीसर्वत्रनवाख्वाभ्धीगवयोः हदाग्नेये-दूरे गतेतेदि गैंागवेद्विवेपूवं परि यास्येपर्यु दगीथे दिवा यानिपार्थे तानिराहे वाशिशीप्रा षष्ठः ॥ ६

सारथिनियासीत् प्रमि इव वति धियो धेन तंपि तेतिः सैाग्मतेपनी यसी मिद्दी यानिपार्थे तानि हाउहुवायिसिष्ठे च्चीयेतिवा द्रिस परिश्राष्कारणिधने नृभिः षेथञ्जयोर्ने मंतेदिच्यान् दस्येसोमसाम्निषसि दसि सिछ पूर्वेणोक्तं शार्गे हरिः सप्तमः ॥ ७

अक्रान्वासिछथमे सेनः देवान् णीत देवान् द्रेप ज्योतिः सितेमदे यामएषि एषि शनेमती सूरे वीषः ऊती षावीदहीनाः ॥ ८

गतहन्मनयोरत्के प्रथमः ॥ ९

शकुनिवमी यानिपार्थे तान्यैाश नेष्कलेनेमि वाशि-षणे मानवेवेध आष्कारणिधनेवेद नेंद्रो नितेस्यद्री इन्द्रस्ययशसितारणि एकः जमवर्त्ततुते अभ्यन्तमें द्रेः

याद्दि चित् येमुः इत् अति। धन्वे हारी गम्भी सम्धे। मनाज्यंगहि। काखे देया। मीढे ब्रवी द्वितीयः ॥ १०

बोधीये च्छन्तो दर्शि। परे बोधीये च्छति। अध्ये च्चेह। वैश्वज्योतिषि षीद येना वेद। शने यर्दों यन्तो। परे श। नश्वे ति चीद्या देव सुमे। भाशने देव। रथो तेह तमे। शुभार्गवे स्नानि वैधृतसिष्ठे याणि धियः। एताः कावे श्वेद। परे कावे वीत् दे। भरे पत्नीः। वे पूर्वं तृतीयः ॥ ११

अग्नेस्त्रिणिधने मन्दी। संचारे दे वे दे वे। त्तीये सी वी तीसा ज्योती षावीत्। स्वारे कौत्से त्के चतुर्थः ॥ १२

श्रोनिधने हिन्वे। कौत्से प्रियाः रयिं। ऐटते स्नानि। शने यन्तीः। रूपे धेन बृह्तीः। साभ्रे द्विवे-पूर्व। वाभ्रे तीरा वे-पूर्वं। मार्गीयवे मह्नी पञ्चमः ॥ १३

सुचे मन्दी। क्रौञ्चे मदे। शाकले न्वेवा। आष्कारणिधने भि-पूर्वं। मार्गीयवे तेजा। द्वैगते सीद सञ्चाणि ॥ १४

सफे शिचा हिश विदा:। वैकक्कुभे न्नवौ भि-गीये। काखे रिन्न उपास्मै-न्नीये ते। दवि-न्नीये तीया हेट क्रमीत्। पव-न्नीये वारे नघे। सफे सुन्वे सुचि। प्काले शिचा हिश रयिं। लैये नस्ते हिश्रू। नौधसं पूर्वेणोक्तं। लैये स्यते। प्काल इन्द्रा प्रथमः॥ १५

भरे ब्रह्म। नार्मेधे पतिं चतुर्थे स्वरे अभि। लैये रवौ। परे लैये यूथे ष्लिरे। कमश्वे भिंणीं न्मावौ। वारे शि स्वि तवेत्। दैव्ये दर्शि। परे दैव्ये चोदे। श्रुध्ये प्रिवभ्यां द्वितीयः॥ १६

सर्ठहिते रौ ये याभिः क्रतुमी। न्नीये नवे। आयन्तीये दे वे प्रायश्चित्तानि॥ १७

रावतरइन्द्र। धसे नवे। श्य तधसे रिट स्रेणे नीके रे:। क्रौञ्चे भि। परे क्रौञ्चे जरि हस्रे तानी गिरे:। रवंतरे भिः आस्यत्। श्यभ्भे तासी प्रथमः॥ १८

सहो-दैवे स्वाद्रिः। परे सहो-दैवे नीषा सचे वक्रि उत्तरे मराये नीषी मारे। वारे भिः। रावतरे थे। श्यभ्भे स्थेशा सखे। तव-मराये परि। वारे र्षसिं। त्वाष्ट्री गहि हरी। सिष्ठप्रिये स्ति तेदि। महामित्रे क्रविः वज्री स्तोमैः यसीद्वितीयः॥ १९

क्रौञ्चे घोषे। विते त्सुरि। असा-वित इन्द्रि। सुते ष्टुतीः। गाय-विते चेत। खतरे-सिचं देवः। त्रीये सूरी। मराये ग्नि ष्टीधी प्रेष्ठी। वारे पूर्वे तीया। वाभ्रे ताग्नेः। शैखण्डिन आभ्रि यदि। श्येन ईया। मार्गीयवे सन्ते तृतीयः॥ २०

वार्त्रतुरे स्वेह। श्रौष्टे च यानि। प्रवद्भार्गवे तिरे तिसा जूतिं मते। उद्वद्भार्गवे येना येति ऋषिकृत् सामराजे थमे विध मन्नि देव वृणी त्सुरी ज्योतिः। कुत्सस्याधिरथीये वन्ति एति रेभन् जूतिं मते। अक्राज्ज्योतिष-थमे देव वृणी। त्सप्रे सेनः देवान्-पूर्वं। यामे क्रमीत् अभि। गौराङ्गिरसे वि च। अथासोमी-येन्द्रे णा ह्याउह्नुवायि। सिहे राजे। इन्द्रस्यापामीवे नानि चतुर्थः॥ २१

अभ्यन्ते शिगा रीया रेज धी भिः प्र दै थि वीं। आचाभ्यन्तइन्द्रा हरी रसि। नैपातिथेन्द्रे स्वा। आयन्तीये वारी न्द्रुद्राः॥ २२

हस्ये द्वितीये सन्धितरे णोति। तृतीये श्रुध्दि सोमी। अरिष्टे पवि त्वाणि तिभु। वैराजे त्वाणि मार्हन्निरे हिवी हरी। रश्मइन्द्रः तमित् रसि। वाजीये वरीः। अष्टेडे मंणि। वतीष्विन्द्रा। रैतवभर्षइन्द्रे

श्येने दीर्घं शक्तिं। पूर्वं दे वी। भद्रे रुद्रिः। संक्रतिनि परि। भर्गं हविः। तमसोर्कें राजे कविः। तरे भीषु वासि दशरात्रः॥ १३

यज्ञा-तरे तेय। मत्स्य-बृहति षाते। प्रत्य-तर एनं। यज्ञा-स्वरे तत्ते। प्रसु-स्वरे सावी। मूर्द्धा-भासे ग्निं तीषुरेव। बृहति हिवे। परिजम्भे हविः। राजने स्वाद्री योधीः। स्वाशिरामर्कें कविः विश्वे। द्रुलान्द-प्रथमाया मीया षिभा स्वांची। द्वितीयाया मन्ने स्वांची। तृतीयायां महि अग्निं रेपु देवा संवत्सरः॥ २४

यस्ते-हरे वरे वे-पूर्वं नधे। सत्स्तोभे धारे अभि। परे सत्स्तोभे तीनां। तमसोर्कें न्टभिः हरिः त्वभिः। वत्सायाङ्गभिर्हितीयं हरिः क्वभिः प्राचीं। बृहति साखी। स्वाशिरामर्कें दिवे-पूर्वं। बृहत्यस्मि। वलभिदि राज्ये काहाः॥ २५

यानि पार्थे तानि द्वितीये दोहे। यानि संक्रोशे तानि तृतीये। रश्मे याद्र वस्तीः। अश्वव्रते शवतिः। अयंपू-तमसोर्कें पतिः। स्वर्वन्निधने यानि तानि। परिप्र-तमसोर्के तेसा च। तरे द्दीषां। बृहति थिवीं। स्वाशिरामर्के कविः शुचिः मदी। बृहति

द्विवे-पूर्वं । वाजीये ग्निं । पयसि विश्वे तिमा-हीनाः ॥ २६

वाजीये प्रथमे ग्निं अग्निः । द्वितीये मद्दे । तृतीये प्रति वार्षौः तना तनी । तमसोर्के भि प्रि नीय रीय भिः ये अभि अधि । अध्यास्यायान्तमसोर्कें परि । संकृति विनि परि सवाणि ॥ २७

द्वितीये सन्धि-बृहति महो तवे । अग्ने बृहति शुषे श्विभ्यां । त्रिक-बृहति सई । यामे क्रमीत् यधी प्रायश्चित्तानि ॥ २८

रिश्चे वद्व । वैराजर्षभे द्रिः अस्ति वाणि हएसि । उत्तरे षभे वक्मि नी षी वामीत् । वत्सायाए साईं गोषु-वत्सायाए सङ्ग । अतीषङ्गणी ह्रस्वायाए सखे । वत्साया मवी येव पेगी । वाज-वत्सायां वेधा वीन्व । एतान्येवातीषङ्गयोर्वौ वर्जं । सुता-तरे वे । तव-बृहति द्विवे-पूर्वं । अरिष्टे सखे वे-पूर्वं । वत्साया मग्निं यजि परि णीनां सहि । तमसोर्कें मरिस । इन्द्र-वज्रि-आद्याया मिन्द्रो द्वितीयायां पूर्त्तिस्तृतीयायाञ्छा-दसी । षुसिमास्वतीषङ्गेन व्याख्यातः प्रकृतिभावः प्रकृतिभावः ॥ २९

॥ इति चतुर्थः प्रपाठकः ॥

सौभराभोवर्त्तजयानां वृद्धं तुरीय मपोयू वाजे तो९
ष्यतिमधुदस्म मनाद्यं जये श्यावाश्वे चायावाखासो-
मधाम सफपौष्कलयोर्वै हीष्या मूने द्विपदाया९ सखा
तुरीय९ स्वेमह्नि द्वितीय मन्वयिक्या मच मीढ्व हृङ्गियें-
मिमह्नि मधोपारिष्टे रयिभृथि त्रिष्टुभि चोताया९ शने
च द्वितोयचतुर्थस्थ मयन्तो युधा ते देखे चातये वकः
सर्वत्रान्ता मपुरन्धिमप्रशस्तिमाश्वादि श्मे धृष्णास्मान्म-
धोर्द्ध षाावस्त्रीश्वरवेषष९ षष्ठ मनो वाभराद्यौंधाजये
सर्वं मरारणस्तावीपान्तान्देव्ये दाखीसो हव्ये णी जनित्रे
श्रृगे लेये द्विपदासु त्रीये दांत्ये सनाद्वितीय वैरूपे
प्राह्वाङ्कु९क्रज्ज्वासंयोगे वकयाभिः सुशत्वविधृष्ण, सोम-
वाराग्निहोतयोश्च नासाद्दधीन्म, द्र नद्रखब्दीचक्र त्यानि
ष्यतेणिमृढ्व निहोताणः सोपंमद्याद्रौ:परिपरिक्रतुरि-
मान्गोदन्वते चागिरिप्रभृतितिस्त्रैशोके चाद्यन्तायो-
रैटतसारथिनोरविगीतां विश्वामित्रे च सर्वासु नवे च
विकल्पे नैकर्चे यवे मद्यामरसन्दोषं प्रथे चाद्ययोरन-
द्रुह्यं वैधृते चि सर्वं जनित्रसंचाररयिराजेषु द्यौताने
तृचमध्ये चतुरक्षर एकर्चे चोत्तरयोर्घं यामे ॥ १

पृश्निन्यपादादिर्भादनोविभिरप्सु रुताभजश्चाद्या-
दनुत्सोपख्याभीशवेभिगीतादद्रिनोऽचर्षण्यतस्माच्चावि-

यैंदन्तोरो नौधसआयिन्द्रान्तादतंनपुणो विच्छन्दसि
च पूर्वास्त्रियप्रस्तावसदकतुरीयꣳ शिप्रमतिसुताद्ययोः
स्यादेश्च परं नोत्तरयोर्वाल्ये ष्कले योनै हव्ये चोपशि
परिप्रधन्व-सखा-प्राणा-टचयोः शने च स्वास्विनो-
राद्यायाञ्च विकल्पे हिठीये चामप्रटजाप्लुतो वलोपश्च
द्वितटतनीचः फे हतिक्रष्ठादवद्वꣳ श्ये ने जिग्यु यं मवोवृ
मत्यवरोहे च शाक्तो च नय मजयेहारादवितापभो-
रिया च तावनेहारादिरनेकर्त्वं दादैा भासे च नौरस्त्वे
निते च त्ये न्त च त्वाष्ट्रीसाम्नि हव्ये चायोनै
मत्सरि शब्दाः स्वासूत्तरयोर्दैव्ये त्रोदे हारे थे च
धौ च हारे यास्ये देवो जयसाप्तमिकाचिणिधनाया-
स्येषु च थे सार्वादिर्यवाख्ययोर्हितान्तःप्लुतः-पाष्ठाहे
ष्टु प्रिये सोमा वार्श्रे सोमो दनूते तुरे धाखादिर-
योनौ पुर्वे ईडापाय आद्य माद्यायां वꣳशीये चाभ्य
आभ्यीगवे च द्वितीय मसन्तु स्वारे च पर्श्रे योनै पृष्ठे
चाजिगसुरूपाणां च मीढे व्यमशीगीथाद्यङ्गावे ते
त्रीये स्वासु पुना-देव आद्याया मन्यत्र प्रमꣳह्याद्ययो-
र्भाद्रिष्ठाः शांमेते वैश्वामित्रे कते थे तुरीयꣳ सर्वत्र
षष्ठं ध्वचयोः पाजे थे भे दीर्घे परे सर्वत्राककुभि हव्ये
त्विवाया मपादौ घ्रतनिधनसांवर्त्तयोराद्यायाम् ॥ २

घमृगाद्यन्तमसे यश्च परात्सर्वेच नाहं पादतुरीयं वात्सप्रे त्रिष्टुभि पाष्ठेच दीर्घे स्वत्र९ षा षी दान्तोर-चौद्रे ति चतुर्थं ती च धीगवे स्तावषष्ठं प्रत्युत्क्रामति सर्वत्र चमं योनौ पर्यूषु विशस्त्वा९ रित्वं यात्त्व द्विप-दात्साद्य मायिन्द्रा सोमाभिधाम्नेतृतीये वार्द्धस्वतन्वा-राताशतादव्धायां त्वां धा मध्ये माग्नी च मा गायतो पहितातुविशुद्धी यौदलयोर्द्वारं वाचःसाम्नि सि ते थे द्वितीय मायास्व आन्धान्तोसंयोगे द्वैगतोऽभिगीताद् वभाच्च प्रसोमप्राञ्चयोस्तवमध्यमायाञ्च तृतीये बृहत्यौहो वायाः पर९ षष्ठ मच्चरं क्रम्यते त्वमग्न आद्यायाद्यं मध्यमायां तृतीय मुत्तमायां चतुर्थ मनुष्टुप् प्रथ-मायाञ्च श्येनोत्तरयोर्द्वितीय९ सप्तमङ्क्तिमित्पूर्वयोस्तव मध्यमायाञ्च गौशृङ्गेष्टादशविं९शेष्टुभिष्टुभि त्रीय-तृतीयेन्त्यामायिन्द्रादिः सोमः प्राष्टमभिवम्री च पञ्-रश्म्पूर्वसौग्मतेषु न योनौ उवउतद्विषा योनौ हिन्व विशीये तायिष्यामादिर्योनौ च स्वासु शने द्वितीय मन्त्यायाञ्चान्त्यास्य गौथोपान्त्यं चौषु बोधा येन यानि नो प्रवाज्याद्याद्योपायद्वितीयद्वाख्ये योनौ सिष्ठे च दारद्वितीयं नदेपुरोजित्या९ हविषे च सवाज्य-चायाए९ शुध्ये च नौ रश्मे चोत्तमाया माद्यं ध्य्मायां

तृतीय माद्रायां बोधीये प्रवाज्याद्ययोगीथे तृतीयं द्विः
क्रुष्टश्चतुर्थं मन्त्रायां वाशे ध्रुमपादयोरन्त्यानि त्रीणि
चत्वारि पिबन्तमयन्तं हि वैच्छन्दसेकमश्वे वनिहो-
जितस्मै हृशन्यौः स्वग्ने भिः कृष्टानि दैर्घे ब्रात्याग्निष्टु-
तोर्गीथद्वितीयसप्तमे क्रुष्टे स्वासु द्वितीयषष्ठे प्रस्तो तृतीयं
मर्मृ चतुर्थं थमोश्च द्वितीयं त्रैोये सर्वत्र ककुभि चतुर्थं
योनौ वैयश्वे सप्तमं पञ्चम मुत्तरयोरेकर्चेष्टमङ्गीथचतुर्थं
च ॥ ३

तरे हारादिरनुत्तरयोः स्वासु नवे गीथादिर्योनौ
शोके सान्त्ययोर्विच्छन्दःस्वाग्नेये ककुभे च योनौ
सामराजे च पदान्ते काम्या पदादौ च दीर्घे न
जागृविर्दैवस्य क्रञ्चिद्वात्समारुसूरिकारिदाशुपीतीरा-
जने चाद्ययोस्तृतीये जगतीषु च वाराहे परयोश्चान्त्ये-
षु श्यैते गीथषष्ठन्त्रिष्टुप्सु दशमं मध्यमायां द्वादशं नित्ये
गीथषष्ठं रू पञ्चमं हृस्वायाङ्गीथादिर्वाद्वामागासो-
मस्पतिः सेधे द्वा द्वितीये यथर्चं भवत्यषिणोदनः सर्वत्र
पादतृतीयतुरीयं वृद्धमन्त्यस्यावृद्धं वर्त्तं च तृतीयं
विश्वासां विश्वास्ते मरायश्चान्धानन्दे अनुपादं नन्दा-
यास्थाने मागायतापरिदुहाशकुपुरः सखातन्दुदत्ता-
दिषु च नन्दा पर मेकोश्च युञ्ज मिन्द्रनावेकनीचं मासु

सत्वस्वरान्तं हित मनाकारान्तं स्वंग्व्युच्चैके स्वंव्यु-च्चैके ॥ ४

अथ स्तोभगतागत मगतिः स्तोमस्य स्वरे प्रत्यये सन्धौ गतिर्विरते कुचिद्विरतेव्यगतिर्व्यञ्जने प्रत्यये गतिरगतिश्च तत्र स्वरव्यञ्जनयोः प्रत्यययोरगतिमन्तः स्तोभा ये तान् वक्ष्यामः । कण्वबृहत्याथाल्यावगतौ पूर्वकल्पश्चोदिन्द्रेत्यं त्वाद्वैकाराभ्यासस्य विकल्पो न गतागतस्य मध्यमश्चागतः सत्वन्नउहावृषखपुमा-नद्वितीयायान्वर्दिंप्रत्ययेयम्पूषायां सर्वासु पूर्वं जनिवेत्यस्य स्तोभस्यागतिर्यस्य द्वितेत्यत्रान्तरस्यापि गतिर्वास्ते हाइस्तोभस्योत्तरस्यागतिरभिसोमाद्यायां माद्यः स्तोभः स गतिप्राप्तो लुप्तगतिर्भवति क्रौञ्चयोः पर्यांकूपारे चागतः स्तोभः पुरोजितीत्यस्मिंश्चस्त्रे गतिर्भवति न गतिमान्पूर्वः स्तोभः सोभरे सनोयुवा तवत्यदिन्द्रियायां सर्वासु तंवोदस्माद्यायाञ्चोत्तर-स्त्वगतिमान् भद्रा इन्द्रस्य मदत्यनुमादेवताहव्यंप्रेम-ष्वराय ॥ ५

अतः परमगतिमन्तः स्तोभा ये तान् वक्ष्यामो व्यञ्जने प्रत्यये स्वरे तु गतिर्भवति शाक्तेत्र प्रथमायां सर्वउ-त्तरयोश्चक्रमासत्यत्वंहिरण्ययुस्त कक्षे सर्वे नेन्द्रं-

सुत इन्द्रङ्गीर्भिराग्यागमग्नियमते घृतनिधनेन्त्यः
सर्वासु मधुनिधनेन्त्यश्च ऊर्जन्देवोदाद्यारयोर्यौक्तयोः
स्वधाप्रत्यये माधुच्छन्दस उपस्वसरं च याभूषन्ति सुषा-
वसो पुनानःसो च्युष्टम्भे स्वादिष्ठाद्ययोरन्त्यौ मदृगे
प्रत्नङ्गैतमेन्त्यो वैष्टम्भे वय मन्त्रः सर्वासु कार्णवे भिः
प्रत्नꣳसधस्तोवीयान्ते न जातमाविश्वाशविस्तोचीयान्ते
यदिन्द्रयानपायत्वादेवानाञ्चेन्दुरिन्द्रायविश्वस्येशास --
हस्तधावाचःसाम्नःसोप्रियन्देवाय विकोशꣳहारिवर्ष-
उलोकञ्जमन्दानस्तैरश्वे प्रत्नामृतस्याभौशवे पुरूणि
घृणाश्रीणान्तः समुद्रस्य पुनानायामाद्यः सर्वासु स्वः-
पृष्ठे सर्वे नाभिसोमाध्यास्यायां विचे प्रत्यये पृश्निनि
ज्येष्ठं यदिन्द्रन्तꣳशुहस्तेनसुषादव्यः सुघृणा प्रत्नं पुरू-
ण्यातीषाढीये सर्वे रक्ष्येयोश्च सर्वे नोत्तरे वृषो अचि
वाजजिति सर्वे न रयि मचिक्रम वरुणासास्ति नर्यो
प्सुमदा धरुणं वन्तीयदिन्द्रे सन्तु देदिशतिरनाधृष्टा-
भिर्मधुपर्षिपृथुप्रगामोर्ज्जोनभुवद्वादच्चन्दधातुष्टिमोम -
ध्यश्राविष्णु गौयतोवृतानि हिन्वन्नृताभक्तयत्स्योजतउ-
दुस्त्रियाश्रवांग्रथꣳसजूरश्वायन्तोलागोरयिर्माशद्वपरि -
क्रत्वन्तिगूर्दपूर्वयोर्हुम्माहिन्वविशीर्थौस्तरयोरन्त्यो यो-
नौ चान्त्यः ॥ ६

दत्तणिधने गोषातिरिन्द्रायद्रोणे कार्त्तयशे सर्वे न तु विवसोः स्याम सुम्ने साकमश्वमुच्चाया माध्यः सर्वास्वन्यत्र प्रथमतृतीयपञ्चमा न मध्ये स्तृतीये लम्बे सोममिन्द्रायशुक्रान्त्दुक्के हारायणेन्द्रम्पवमानसा वरुणसामदिरोर्जुनी वैयश्वे पुनानाया मन्त्यो भासे क्रतुविते नापवस्वमण्हिष्ठः सितेन्त्यः कौत्सेभितृतीयाया मुभौ स्तोभाविन्द्राय पूषाद्ययोः स्वादिप्रथमायाश्चोत्तरस्तण् सखायः परिण्य रचः सैन्धुचिते तिसोवाचोत्तमाया मन्त्यः पवस्वाद्यायाश्च मन्ते प्रत्ने पवमानगोभिः सुषादब्धो दुहानोदावसुनिधने त्वण्सोमान्त्यः सर्वासु मदेषु गोषातिर्हा विष्कृते त्वण्सोमाद्यन्त्ययोः स्वादिप्रथमायाश्चोदण्शीयइन्द्रसुताया मुत्तरयोर्मैधेच्छाप्त्यये ॥ ७

सामराजे पवित्राया मनाकृष्टो गोषूक्ते र्यश्वामरुतान्धेनो सर्वे त्वाष्ट्रीसाम्नोश्च सर्वे न हरिं वत्सं पवमान वाचस्पतिः सोमस्पतिः सखेन्द्रस्य पुरः सखायोर्वाचीनं यज्ञं च ब्रह्मोदण्शं युंक्ष्वाह्यथा गिरां बृहदाग्नेयेन्त्यो यस्ते सोमसाम्नि गोषातिरुत्तरे जनित्रे पुरउत्तरयोरन्त्यः स्वर्वन्निधनइन्द्राय स शुक्रइन्द्रस्ते सुतस्येन्द्रस्य यशस्यानुत्तो वैश्वामित्रे सरज्जार आनि-

धने तु प्रत्यये पूर्वयोश्चाभिगीते प्रत्यय उद्धत्प्राजापत्ये सर्वे न नृभिः शैखण्डिने सर्वे नयेत्वायद्दीपविनशी-पतिः क्रन्दे शूर इन्द्रस्या उवाभीके सर्वत्र न सुता-इन्द्रायाङ्क्षिद्राङ्गोरूपसन्तनिपार्श्वानामाउवा सर्वत्र नतालव्याद्यात्पर मतिहार मेके विरते गतिलोपे न सन्धौ रूचाहरा३१उवा२३यिणी२३४यारूचाहारा२१ उवा२३णो२३४या क्रतिनिपरीतोत्तरयोः श्रायन्तः सर्वासु वत्सासु सप्तास्वभिज्यांकाः पवस्वाद्ययोराजुह्वा-नस्यातीषङ्गपवस्वाद्ययोः सिमासु च च्छन्दसीष्टाद्यायां यस्ते हरे संयोगे प्रत्यये वृषिा सर्वे न वशिप्रत्यये न वशिप्रत्यये ॥ ८

वाद्दैमन्ते नीचैः पुनाप्रत्नंस्तृज्यसुषापाहिपरिधीं-दुहेमꣳशक्रैथेपुनानायां प्रान्त्ययोः ष्टम्भे वयं पूतꣳ राय आसुतादꣳष्ट्रे चानिन्द्रं तवात्वारं पर्यां प्रान्त्ययोः शीये विव्ययुं चूचितेशुभ्रꣳ रायः सꣳहिष्ठीयासितयोर यमयाहरिश्रीलीये याभिसुताद्दिवःपीविद्माकूशुद्धीये मिद्दे गिरिम्पुरो जिप्रत्वाष्ट्राश्व सुता च प्रान्त्ययोराग्नेये पुरोज्यग्निमाशुनाध्वतवप्रसोासनःपर्सँ चाप्रसोषूत्ते शुभ्र-मुच्चैनायादचसꣳहितयोः स्वादिमान्त्योसꣳद्यदाभ्यस्ति-स्वश्व न षडन्ते तृचयोर्द्दे पुना च सेधे पुनापरितवाम-

न्तवत् प्रत्नं प्रपिबाभिसो द्वे श्रीसद्मने यंदासे चासिते पघ्नन् ऋचे मन्द्र मन्तवदुक्थे प्रहिन्वोच्चैः शङ्कुन्यस्य- प्येष सर्वस्त्वयवाश्वेपनकाश्वे श्यैते द्वे योनाविन्द्रक्रत्वायां च परमज्याः स्वादोर्वाह्वपुराजोमाउत्वेति सर्वः पुरो- जिगिरिं जनिच आर्षभः श्येनयोः प्रान्तरे वायोर्द्वर्त्तेति वाम्ने भिसो द्वे मान्यत्व लौशे गोविच्छेगनवदसाविमान्तरे स्यपीत्वाकाशीते नवे मन्द्राभिमत्सुषामह्ने चानुत्सोरा- जरंध्रोत्तरवाजजितायौंनाविन९ हवद्दिश्ये पुरोनदे पुनायामे पुरोयज्ञाह्वत्ववीरापारिष्टे प्रयोनावयं पूपुरः क्रौञ्चे साप्तमिक आयास्ये नुत्सस्तवकावरथन्तरयोः सर्व- चो प्रोस्त्व ॥ ९

थेषूक्ते द्वे साव्यामयोर्वैयश्वे जय उतो नः शनेन्द्रः कलेषां प्रान्त्ययोराकूहविषघ्नतंनिधनाश्वसाध्यानां द्वे सद्मनेयंदासे च कौत्मलाभ्रीकावाभीकसोमर्षभमरुतां योनौ प्रमरुतां च चत्वारोन्द्रमलीये प्रवाहे स्तृणान्ति देव मधां न ककुभे त्व९ सर्व उग्रं कदानत्वदृग्रहणात्सेरयि मिन्द्रासर्वोभियोभरेस्थूरमेवासर्वोयोनौ प्ररे च हृजिगे प्रपर्षं सोमवरुणास्वारे योनावाद्ययोर्मरुद्दवाना मूती दिविद्युम्नामिन्द्रे दिविद्युम्नास्य द्वे पृश्निन्येकर्चे पुनानाया मन्त्वत्पर्यामैतयोर्द्वैव चैव मभिसोमयोनैमान्ते यज्ञा

सर्व्वः क्षिते चामदाय कण्वबृहत्युपोत्तमं चावृद्वाद्य
पादाद्यꣳ रहस्ये च बृहत्यविष्टु बतिच्छन्दसोः साही-
यमेलꣳ सर्व्वो विच्छन्दःसु च वत्सासु योनौ च प्रशनवा-
र्श्रयोरनूनेस्मग्रहणाद्दसे च न सोमस्त्रीयत्तु विशीये
प्रक्रोशैापगवोत्तरवैष्णवैकर्चेंटचहवद्दे व्यवरूणायववाजो-
यादारसृच्छुद्वीयपदनिधनचित्वषड्गयवाव्यामानां विप-
र्ययो यथा योनौ ॥ १०

ग्रहणानि श्यैते योनौ मरेवाहे शृङ्गे वत्सायां क्रमश्व
च पूर्वे ब्रहति चायोनौ धःसन्निनि पूर्वे ष्ठउच्छुवाद्
गूर्द्दे उत सुम्नाद्वत्तीये मरुद्दविषयज्ञापस्वामृते सु-
मार्गौद्वितीये प्रसोपास्थे द्वडे च लꣳ सर्व्वास्विन्द्रक्रमध्य-
मायां च श्नौष्टउत्तमास्त्वयः प्रद्वौमशीये ब्रह्मायूथे गिरां-
मौठमानवयोस्तृतीयोदावसुनिधनपूर्वं नित्वजम्मशु-
द्वीयविशीयवैष्णवैकर्चैरुत्तयोर्क्कानिधनेषु च नौ गौजी
च नवे च तृतीये तृतीयं तुरीय मर्षापैाश्विन्न-
मानो गवे तृतीयोनतरदर्षाकरेभिमरे वैयश्वे नौच्छ-
श्वैकि नीचैः पृश्निनि पृता च हविषेद्रिभिरित्यभि-
गीत मेकेदꣳष्ट्र उत्तरे विकृतस्तादोद्दरे द्वे पार्थ एकꣳ ष्ठ
जिवे च जनितेति द्वे स्त्रीये वयमूर्जस्तꣳ सिश्वमात-
धीतिं वारे वाघाच्यावसधमासूर्य्यसवनाजनगृहत्वंम-

स्वायिकाराद् वृद्धं धानीनाजायेरोष मग्निमित्युत्त-
साश्वत्वारस्तमसो योनौ द्वौ द्वावुत्तरावहश्च नैपोर्जौ
महत्ते मङ्गा चान्त्या प्रयघृतवनिश्वारे मद्रादेवे पुरुदा-
ना स्मृतो ग्रहणं प्रवति पादादौ द्वे मध्ये चेन्दुर्युवम-
न्थोशैक मन्यत्र सप्तहे त्वसंयुक्तपादादौ द्वे मध्ये योनि-
न्वत्रस्थ मेक मन्यत्र गोष्ठप्रतोदपुष्पधर्म्मविधर्म्मपा-
र्श्वसन्तश्यवाजसदोविनरे परमज्याः पुत्रस्य मत्सरा-
सोसैामित्रसंकृतिवात्सप्रदष्ट्रोत्तरभ्राजकीर्तायशःस-
सर्पभश्रेयोश्वत्रैतैकवृषाङ्गेरूरङ्कखानां पादादिर्यथर्वं
गवाद्योत्तरेच्छिद्रयिष्ठयोस्थानश्यासने मरिचस्थानयो-
श्वामीढ्वां न हि रिचे न हारित्सराराय आकुदेवानग्नि-
स्तोभानाश्वावक्रातविमायाविनउचा चैके भासे
चानासन् पुरःसुतापरियज्ञोच्चैर्वरिय वेगांवर्त्तेसत्यश्रो
सङ्गवर्णे सधस्थेनः सोमैधेहरि हिष्ठीये वने च
रम्योत्तरे येमागौतमे ष्ठस्मे च कृते च नकिः स्वगो-
ष्ठार्कपुष्पयोर्न वरुणसाम्नि यवन् वृस्पत्ये द्विपदासु च
वाजजिति त्रिककुभे चातिच्छन्दःसु च देव्येपांवृतयो-
र्गवाश्च पूर्वे लेये योश्वादिर्यस्याच्छोत्तरयोः परि-
प्रतायाञ्च ॥ ११

नीचात्परः षः षिधसैधदैर्घवैयश्वपृश्निकौत्समदृग-

स्थानेषु सिनिहत मसᳲहित पृश्निदैर्घयेोर्जितिभिया-
सितेत्वयानमापुरूस्सुतमूमदोविशीयाष्टेड़रूपेषु क्रौध्य-
ष्टम्भतमच्छन्दसवैयज्ञत्वाष्ट्रसोमोद्वेड़श्यैतसाध्राणां यथ-
र्चं स्तृतोयोदादिरश्रुष्टश्चारत्नधानद्यनारत्नधावैयश्वे वाश्रे
चापुनामान्त्यथोरूभयं प्रान्त्ययोः षूले चापरिप्रि वृषा
मोश्वाद्ययोर्वादिर्गौथादिर्धनादिश्च रूपे धसे वेकृष्टा-
ङ्गिस्तोमुद्रोजिष्ठश्च श्रवाज्योरिन्नरोजिनदे च दुरो ब्रध्नः
षष्ठं पयं तुरे धारया द्विसङ्घात्वासदेवकया च द्विनीचा
सोमसाम्नि च त्वेये रयानौ सधरेवतीषु पयसि परि-
नोगिषिवमन्तोक्थयोर्वैद्रिदᳲष्ट्रे षासिते समीमस्तुचे
हञ्ये हारद्वितोय मपुरोजिपान्त्ययोर्निते पुरोजिमध्य-
मायाᳲ शैाते च थे त्रिष्टुप् प्रान्त्ययोर्नैपे गौथतृतीयं
चतुर्थं वष्ठौहाद्यं च पञ्चमं चःसाम्नि च तृतीयं न
वृद्वे वᳲसंक्रतियशसो वृष्ण्यादिः कमश्चे नोत्तरयोः
स्वासु ष्ठश्च देव्ये विष्टष्ठभ्यासे मनाज्ये वादिरापरानं-
यज्ये च हरे द्वितीयो दादिरवरुणात्रि णिधनायास्ये
स्वानोनिचवत्त्रिष्टुप्सु त्सप्रे दादयः पुराजि चाद्यो
वैराजे चाभ्यासोहश्च नौ चासर्वास्वहङ्गताभीशवयोर-
हङ्गताभीशवयोः ॥ १२

॥ इति पञ्चमः प्रपाठकः ॥

अःकारो वृद्धः पदगीतः पादान्ते घोषाकारयोः प्रत्ययोः पुरो३ १हाइताधेवादाइवा२इदा२होइया एवञ्जातीयानि सन्ध्यगीतं वच्यामो मदः शब्दः प्रथमः स्वरः पवस्वशङ्खद्वितीयायां मत्स्यबृहति चतमद्रिवो यदिन्द्रचित्रायां वसिष्ठप्रिये रथीतरो नकिष्ट्रथाया मासिते हिषस्त्वे सोमयौधे पयोजो जनायां वाभ्रे रसः स्वासु तमसोर्के पुरोनः प्रेद्ध इत्यत्र मराये ॥ १

भक्त्यन्तः पदगीतः सर्वत्र सन्ध्यगीतं वच्यामः क्रौञ्चाष्टमिके स्त्रो विभाषयत उषसोभिम्रि स्वानसे ह्वैगते पुनानाया सुत्सोजिगनवस्ते पूतायां क्रौञ्चाष्टमिके मानजर्जं इत्येतौशब्दौ नोधसे नेन्द्रः कद्वेदाया माष्कारणिधने काखे महोदिव इत्येतौ शब्दौ प्रत्नं पीयूषायां फैधे प्रस्मवाजेषु नश्वाध्वर्यवः सुवर्विद इत्येतौ शब्दावाष्टविरित्यत्तौशन इन्द्रः शूरश्च महानाम्नीषु यद्या७रथो वोधीये वारेथादुव एह्य्-हतीयायां तुमद्विवश्च वर्हिश्च तन्तेमदायाए सिषासन्तः स्नुधीहवायां देव७राधः सदुद्रवायाउ रजः सूर्यौ विते महस्तवानो बृहद्रथन्तरे पवित्रवन्त इति देवासश्च वान्ते त्वाष्ट्रीसाम्नि ॥ २

भक्तिमध्यः पादमध्यश्च स्तोभे प्रत्यये पदगीतः सर्वत्र सम्ध्यग्रगोतं वक्ष्यामोऽस्येदिन्द्रः द्वारे वसुरुच उत्सेधे तुवस्वारयोस्त्वाष्ट्रीसाम्नोः रजः सूर्य्यस्य पूर्वे देवो धैतो मत्सरासोऽश्वस्य जम्भे वृषामदः स्वरे बृहन्निधने वयः स्वासु वत्साश्वभिद्य च्यावने पासाश्यं पवस्वमधुमायां चेन्द्रः श्येनः सन्तनिनि सोमो वाम्रे चन्द्रो वाम्रे राधः कौत्से मयो भरे स्तोत्रश्यो वारे देवः पुनाभिसोमयो-मैधष्टस्मयोः स्तावे मत्सरासस्य ॥ ३

भक्तिमध्यः पादमध्यश्च स्तोभे प्रत्यये सम्ध्यग्रगोतः सर्वत्र पदगीतं वक्ष्यामो देवः प्रत्युत्क्रान्त ऐडयास्य-द्वितीयायां जिगत्नवस्ते पूतायां वाङ्निधने क्रौञ्चे जारः प्रसुन्वान-द्वितीयायां विते होषोस्वर उत्सस्निणिध-नायास्ये घृतवृतस्त्रैशोके भरन्तः सौभरलैययोः पुरो-जिनर द्वतिग्रतो शब्दो मराये श्रुव य द्रुमाउत्वायाए श्यैते श्रवः कार्त्तयशोदलस्वेषु श्येनः सम्मिस्नायाए सएहिते जातो वाचःसाम्नि प्रियन्देवायान्दधन्वाए ङ्गः सर्वत्र दत्तशूरावर्कं शार्गे च वृत्रयुजो भारद्वाजे पुरां दर्म आमन्द्रैरित्यत्राभिनिधने काण्वे मर्त्तो योयए सहोतायां कमश्वे श्वाययन्तोभित्वाशूरायां कण्वतरे-स्येदिन्द्रस्याभित्वापूर्वायाए सुष्टुतयो वषट्रायां बृहति

रुषङ्वयस्त इत्यच वाजीये द्विर्यो रथन्तरबृहति राध-
स्तन्नो वीङ्के विधतोभद्राइन्द्रायाए सौभरे भरमाणो-
भ्यभिहि यौधे सृजानः स वाज्यन्नायां बोधीये
बोधीये ॥ ४

आकारो त्वम्पाशब्दः प्रकाव्यायां पार्थवाराहकुत्स-
रथीयेष्विन्द्रायेन्दविति क्रौञ्चे पूर्वयोः स्तोत्रीययोर्वा
हाइस्तोभे प्रत्यये जस्वा वैश्वमनसे वृधा बृहद्वारे पूर्वथा
कारवतरे द्विता सुज्ञाने दिवश्रा प्रत्नम्पीयूष मित्यत्
जयामहीवोरसेधेषूच्चैनैटत एकारे प्रत्यय आर्यः कालेय
आसाइन्तीयोत्तमे जेथा नार्मेधे हव्या विशीय इन्द्रावो
कावार्षाहरे गौथेभ्यासे प्रत्यये दुहा सखा मत्स्वे प्रत्यये
वैराज आःकारो त्वंमदाः सुतासोमायां बृहद्रथन्तरयोः
स्तावे तमाः श्यावैश्वाश्वावायां प्रत्यये नित्यवत्साती-
षङ्गसिमास्विकारो त्वमिवोत्सेधे दुहानायां प्रतीनि
द्विहिङ्कादेव्ये र्षसि कारवतरे ड्विन उत्तरयोरास्तोभे
प्रत्यय ओकारो त्वन्नदंव ओसएस्तोभ ओस्तोभे च महा-
मिन्दवेकारौकारयोरत्वमोर्ध्वे महे त्रीयेऽकारो त्वन्नो
अर्षसि पुनानायाए साप्तमिकत्रिणिधनायास्ययोर्यौ-
धाजये च वृषो अचिक्रायां च त्रिणिधनेयम्पूषायाञ्च
क्रौञ्चे वश्व बृहति स्तावे परउत्सेधे दुहानायाम्पुरो

मत्स्वे प्रत्यये वैराजे पुरुषः शब्दः प्रथमस्वरो व्याहृतिषु कामे च सर्वासु मदभियरुहशब्दा मध्यमे विकल्पे ॥५

वृद्ध ऋवर्णं सर्वं मार्भवति षकारस्पर्शयोः प्रत्यययोर्घृताः का२३र्षािका२३ह्वीं३ एवं जातीयानि टकारस्तु न सर्वेषु स्पर्शेष्वार्भवति यथा योजा३४रिट३भ्योमघवाश्रोयितृ२३४पा३ टकारस्तषयोः प्रत्यययोरार्भवति ता३र्त्ता ३यामधिरोता३ र्षाणा२३४श्रो रकारो हकारो पृकारः स्निकारे शुगा२३र्हा२या३रुचदुषसः पार्श्निरग्रा३या२३ यामे चायङ्गैरिति न क्त श्वोने प्रत्यय उक्तास्त्वभ्यासादौ व्यञ्जनलोपः श्वोनका३श्वोनका२३ यदुक्तं पुरस्तात्षकारस्पर्शयोः प्रत्यययोरार्भवतीति तत्रापवादाः सस्रग्मवाद्वध्वा च नामैधे चक्रमा शाक्त्र एतदेवोदाहरणं यूथादानायां कौल्मकराववृहतोः संटभातून इत्यत्राकूपारे मर्षं स्वासु दैर्घ एतदेवोदाहरण मभिक्रन्दायां श्रेनुवरुणयोर्गिरस्त इन्दायाञ्च सहिते नभ्र प्रसुन्वानायां गौतमसाध्रश्यावाश्वौदलाकूपारदासवैश्वामित्रस्वारकौत्सरावतरदोहतरेषु नृभिः प्रतसधस्थमित्यतै डयास्यगौङ्गवीयषेधाभीशाष्कार--सोमवरुणतमतरजम्भेष्वेतदेवोदाहरण मभिसो-

माध्यास्यायाऌहदुकथाग्नेस्त्रिणिधनहन्मनेषु धत्तीयां त्रीयकावाभिक्रन्देष्ववद्युतानायां च तमसोकें कक्त तन्तमदायाऌ हारिभरवारेष्वे तद्देवोदाहरण मय-स्युनानायां त्रीये तन्त्रामदायास्त्र सऌहिते ग्रोष् वत्रासु च ॥ ६

सस्ट त्वैशोके वृत्तवयङ्गल्वाया मभिनिधने काखवे वृषिार्यस्यानोर्वेऌशीयद्वेवापद्दगुपलाजावार-ल्ततोयाया मेतदेवोदाहरण मयऌसूर्याया मामहीयव-बोधीयच्चषभपावमानाश्रुमार्गीसौम्यैटतसाकेष्वृषिक्त-च्छिशु देव्येद्व्ज्योतिषेषु तिसृभिः पाहि रैरवेस्यपु-सक्त्च्छगध्यूहारमानवयोस्क्कृदुविल्गुनायां बोधीये पृ-थिवौ प्रदैभान्ते बृहति च यज्ञायथाया स्वधत्तोम-र्दावन्नाये वृद्ध मथार्भवति षभे थिवौं धृष्णुवृषिा-वृषन्वारे मत्पर्धेनैा कृखवती कौञ्चे मज्यकाखतरे कृन्त-च्छङ्कुनि मार्ज्यमानः सुहस्तियाइ निर्गा श्वकाए२ तंदो२ ट्स्पाया मृवर्णौ प्राप्तऌ रेफः प्रथमस्वरायां लुद्वाया मपद्दिश्यते वा२३पा३रथन्तरे च सवदेव्यह-दाग्नेययोर्ऋवर्णै प्राप्त मकारः क्रियते ना२३ र्वना ॥ ७

ऋचि प्रश्लिष्टाः स्वरसन्धयः पादमध्ये साम्नि वि-

वृता ये तान् वक्ष्यामो मह्व वस इमाउवायां वारदेव्य रथवृहत्सु श्रुथे तु प्रश्लेषोभोन्द्र मभिनायु भिद्यत पार्थे कितवः स्वासु मरुताङ्गभौ महत्तत्सोमायाए स-र्वत्र छन्दसि तु प्रश्लेषः प्रसुन्वानाय सर्वत्र पवस्वयस्ते-मद्रायाए सर्वत्र सोमसामसाहीयशाम्मदेषु प्रश्लेषः पुरो नः सर्वच माशिवासः सर्वत्र श्वाद्रिर्नार्वा च पिबासो-माया मृषभे प्रस्मवाजेषु नः सर्वत्र रवोद्गीथे तु प्रश्लेषो ना अविभिः सुषावसोमायाए सर्वत्राष्टादए-ष्ट्रार्कपुष्पसंकृतियशःसु प्रश्लेषः ॥ ८

सुतेचिद्मानवे वृह्णाच्च सर्वत्रायास्ये -तु प्रश्लेष उदिन्द्र लएद्योहोल्यत्र कण्वद्वहति पूर्वकल्पे स्तावे च जम्भे प्रतिहारे कौल्मे स्तावे गायन्ता यूथादानायां कण्वद्वहति जम्भे च तवाद्यायाए सहोदैर्घमरायर्योर्वे-राजे च स्तावे ' तवद्वितीयाया माभीशवदैगतयो रहस्ये च ब्रहत्यरुषी प्रतिष्या सूनरी द्वितीयायास्त्वा-धीये देवाजर मातेअग्नइध्रीमहीत्यच लन्नइन्द्रौपगवे चासाद्वन्तीयोत्तमतृतीयाया मापाथिभेयदिन्द्रायाए श्येने स्वार्चतोवैराजर्षभे देवाञ्जसा ब्रहति मही नधा रागो राजा च कावे पादान्त्यात्परः स्वरो विकृ-ष्यते यथानूषतावद्युतानायाए शाचिपूजन यतइन्द्र-

द्वितीयायां दृष्टाय विधर्मणि गमिष्ठानसꣳस्कृत मित्यत्रौशन एवञ्जातीयानि ॥ ९

अथापवादाः प्रश्लिष्टा अꣳशोरित्यस्य शब्दस्यावृद्धात्परस्य प्रश्लेषः सर्वत्रेह न यदिन्द्रचित्रायां वसिष्ठप्रियषङ्ग्योर्दिवस्पदे तपोष्पवित्रायां ह्नीये मोषुत्वा पार्श्वं श्रुधिश्रद्दीभ्यासे धियोग्ने भरामे ध्याया मन्ते जिषु सन्तिनि त्वचि सुष्वाणाया माम्बीगवे धसस्तम्बादस्माघाया माथर्वणसौभरयोः प्रत्यस्मै तृतीयायाञ्च रथन्तरे वास्तजारातय इत्येतौ शब्दौ प्रोषुवत्सासु युजाणिरिक्षिषायाꣳ रैरवे वोधयोमहेनायां वाजीये डिते वसो नैककुभे तमोषांयां वर्षोर्चतप्रिये व्रह्मयुजा कत्वे धसोद्रयो वासम्ये नदीधिमः श्रायन्तायाꣳ सौभरे सेन्योसिवार्हद्गिरसन्तनिनोवीहनोग्नेविवस्वद्द्वितीयायाꣳ श्रुध्ये वृषाउदास्यत इत्यत्र वाजीये धरया सेधे धियो सेधे जमवर्त्तं चाग्ने तमद्य कमश्वे ततर्हिथो दैर्घश्रवस्यवो देव्ये श्रवस्यवो देव्ये ॥ १०

यः संयोगो यवान्तः क्वचित् संकृष्टः क्वचिद्विकृष्टस्तत्र संकृष्टग्रहणं न्यर्यसाह्नीयपर्णवर्णमित्रविलस्वेषु नैडे दिव्यं ज्यर्षसि यशः सꣳसर्पपुष्पेष्वापृच्छ्य मवृद्धꣳ सर्वत्र मदेष्वाकूलीये जिह्वं न क्लत्यस्य ह्नीयस्योद्गीथे

विश्वाच्याश्विनोर्व्रतपर्याकूपारपुष्पमरायेषु नाभ्रासेल-
द्रयश्वैतेषु वैघने चामराये त्वमग्नये स्वासु दैर्घध्य-
मायाꣳ सूर्य्यस्याभिप्रियाणीत्यत्र स्वारकावन्नीययोरेष-
एव शब्दः सूर्यवतोश्चिनोराजद्वितीयायां चौशने ति-
सूर्यं पुष्पमरायकीर्त्तेयश्चिन्द्रः सूर्यꣳ स्नुचनैपकीर्त्येश्चिव
सूर्य्यं कीर्त्त्या ववासहाꣳश्वसीत्यत्र सूर्यशब्दः सर्वत्र वित-
नैपयोस्त्वाद्यो विक्रुष्टः सूर्यं महतस्तोमायां वैश्वज्योति-
षवास्प्रयोरामायामासूर्य्यꣳ सर्वत्रास्यप्रत्नाया मयꣳ
सूर्य्यशब्दः सर्वत्रान्नैव तृतीयायां न सूर्यो भ्राजे सूर्य्यस्य न
ते गिर इत्यत्र महि सूर्य्यः कीर्त्तेय सꣳसूर्यस्येहवद्दामे
सूर्या वैरूपान्तरिक्षयोस्त्वꣳ सूर्यꣳ सौमित्रे समु सूर्यꣳ
सन्तनिनि यथर्चं गीते पर्वणिष्वविता दाशे महाया-
न्नीयविशीयवारमहामित्रतरेष्विद्धूक मश्वे त्वामिद्धावि
भरे त्वाय सर्वत्र व्याभिन्नीमैधे कुण्डपाय्यः सद्मने
व्योमनीन्द्रसुतायां वꣳशीये हिन्वन्त्यापसो द्विहिङ्कार-
गौङ्गवद्वैगततरेषु वृवतरे च पूर्वकल्पे ॥ ११

ण्योस्तन्वाधर्त्तायाꣳ हाविष्मतसन्तनिनोर्विभाषा
प्रसुन्वान-द्वितीयायाꣳ रथन्तर इदाह्यो मानवे सुत्रपमा
च्छन्दसे पूर्वो वृषामती-द्वितीयायां न्नीये त्वामभि दꣳ-
ष्ट्रोत्तरे मह्यं द्विहिङ्कारभारमानोत्तरवौरतरेषूतस्य-

वैरूपान्तरिचहूस्वासुहष्णाा वैरूपे हर्यश्वपिबासोमद्वितीयायाꣳ सहोदैर्घे मराये त्वाय्यो: स्यन्तमा मराये विद्वान् मरायवैराजर्षभयोस्त्वामिद्धिरिहितायां मराये सहोदैर्घे त्वभ्यासो नम्नगोरौर्मायवयो: परिमियायां मागौंयवे च त्वꣳह्योत्येतौ शब्दौ सौपर्णं पवित्रमत्ये ह्रीये नकिष्ट्ठ क्षिते साव्यꣳशु: सर्वत्र न सन्तनिन्नि पाष्यो: क्रोशिष्वैरय वैतक्रोशवार्शेषु त्वाꣳरिहत्वंयास्त्व गवाष्टेडसिमासु त्वं दाꣳ शुद्धीये सुहस्त्यरम्भ्रोत्तरवरुणगोष्ठार्कपुष्पेषु स्वान: परिस्वानायां वैदन्वतह्वाविष्मतरेवतोष्वेष एव शब्दोक्रान्वासिष्ठे परीताध्यास्यायां चानवमेहनि त्वं कविर्द्वितीये दन्वते मित्रा: स्वाना: सर्वत्र दध्याशिरो विते व्यद्रिभिर्यन्तीये त्वम्मातौपगवे वरेण्यं प्राध्यज्ञातौषड्ढे त्यो गभस्त्यो: स्व:शब्दश्च ह्रीये स्व: कावाभिक्रान्दयोरत्योर्के त्योगभस्त्यो: ष्वाविशेत्येते शब्दास्त्रय: शार्गे क्रत्व्योनुमायो त्यो गभस्त्यो: स्व:ष्वाविशेत्येते शब्दा: षडष्टेडे ॥ १६

॥ इति षष्ठ: प्रपाठक: ॥

देवेभ्य: संह्वारे नर्य: परीतायां माधुयास्यभीशरौरदꣳष्ट्रजम्भानूपयौधद्वैगरत्वतरस्थानसंक्रातिभर्गयशाथ-

वैखानसेषु नवमे चाह्नि सर्वत्र दैर्घवर्ज्जं विभाषारूणा-सामन्नेष एव शब्दः संक्रुष्टो गामन्नभ्रक्लैव्यध्वसाश्वा-लोमे तमसोर्को चात्रैव तृतीयाया मत्यः सर्वत्र न्यो-जसा कोर्त्तेर्भ्यं कीत्यां काशीतहाविष्कृतयोस्त्व शब्दः सर्वासु त्वां देवासो रीत्या य इत्येतौ शब्दौ वैश्वमनस-श्रुध्ययोरर्चन्तुग्रहणशीयवितयोः सान्वाह्लो वशीये भूर्य-वशीयलेयावतेषु पर्यूष्वान्बीगवसलोभयोस्तरध्यै विते राज्येन्बीगवदैध्ययोः स नित्यः सर्वत्रात्रैव तृतीयायां त्वाश देव्ये न्यायवन्दचाय्य इत्येतौ शब्दौ मरायै शेप्या भारद्वाजे व्यस्थिरन् प्रडिडे वन्तास्यस्वारकावत्रीय-योस्त्वमिन्द्रत्वं वृत्राणीन्द्रस्य यशसि त्व वृहस्ये त्येतौ शब्दौ द्विहिङ्कादैव्ये त्वस्यन्ये यशसि हस्यभीवर्त्त-र्पिता लोशे लग सुवीरः श्येने व्ये शब्दः शिशुन्देव्य-ज्योतिषयोः पुत्रेभ्यो भारद्वाजे प्रत्यशब्दो नानतरयोर्यु-ज्या विशोये व्रतान्यस्यश्यैतवाजीययोः पूर्वा मुखेधे स्युक्वभिः पार्श्वे हरिण्या सप्तास्वेभिर्वेलासु ॥ १

तवेसोमाभाभिहोत्येतौ शब्दौ दैर्घे घ्रानाश श्रुध्ये पृणाध्वङ्करवतरे जातमार्यज्ञीये पाद्युत्वामिच्चरौरवे द्य-ग्निभिस्वरत्य स्तावे नैपे दुर्यन्तुग्यता चान्बीगवे न्यै-रयज्ञीये त्वां दूतं ग्नीये शग्धूहारमानवयोस्त्व ह्वी हि

जम्भे त्वम्युङ् कौल्मजम्भयोः प्रयत्यकौत्सेग्र्यः कालेये पूर्याः सञ्जये वीर्यस्यख्यस्य वारे श्रुधीहवायां माद्ये-पृष्ठे सख्ये श्रुध्यनैतयोस्तूग्माः पूर्वं व्यनहृत्वे क्रतु मित्येते शब्दाः श्यैते पार्थे हर्यशब्दस्य दैव्ये वाहधं न्यञ्च दैव्ये सवाच्या नकिष्ट्वायोषत्या च वाशे सꣳ-सद्यत्वे दैवोदन्त्वग्रान् द्युम्नस्यमन्ते त्वमङ्ग काकुभे व्यूषाः कावे महत्स्वासन्त्वनिनि वीरसेन्यः सन्तनिहङ्गिर-योरोषधीभ्यो च्चौये मत्स्यबृहति दधे वार्याणि कमश्व स्वर्णज्योतिरुत्तरे कमश्वे स्वशब्द एनाश्रुध्येदश्र्या बृहद्रथ-न्तरयोर्वर्हात्वꣳ श्रुध्ये वृषावषट्कारणिधने काव्यं नाभ्यासे त्वांहविन्द्रगामश्वमित्येते शब्दास्त्रयो वारे त्वामित्वाङ्काष्ठासु प्रतिहारे बृहतित्वाꣳ समाहेष्विन्द्र बृहत्तरे त्वाꣳशब्दौ पूर्वंष्विन्द्र च जम्भे जनित्वाश्येने वीर्ये व्यबृहतोरन्नैव काम्यं दैव्ये सक्ये स्फिग्यं च रथन्तरे यामे व्यख्यत्सोवा रथन्तरे स्वोवा रथन्तरे ॥ २

आयिःकारस्य भे स्वरे प्रत्यये ग्रहणौर्विसर्गलोपः स्याभिर्यस्ते सुरूपे श्यतिरभिद्युम्नतृतीयायां वाचः-साम्नि भिः स्वासु त्रिशोये शुचिः परिप्रियायां मार्गी-यवे गृविः प्रसोमदायां कावतरे सुतिः पिबात्वस्याभि-निधने काण्वे नृभिर्हदिरिन्द्रोमदायां वार्हद्गिररश्मयो

वैरीः स्वासु रश्मे गिरेर्वृष्णिज्योतिः स्तावे प्रत्यु बृहति सोमस्पतिर्हं प्रत्यये सहस्रधारायां त्वाष्ट्रीसाम्नोः स्वर· प्रथमे चारिष्टे चानादावद्रिरभ्यासे प्रत्ययेक्रायां वैश्व-ज्योतिषवात्सप्राकेंषु नकिर्न्नकिष्ट्वद्व्यायायाꣳ स्वशब्दे प्रत्यये गौरीवितासितयोः ॥ ३

उःकारस्यौहोत्रायां प्रत्यये ग्रहणे विसर्गलोपः पृथुः सांवर्त्ते क्रतुः परीताध्यास्याया मायास्ये त्रीणि वितायां वार्श्रे परिप्रियायाञ्च मार्गीयवे क्रतुरिन्द्रक्रतु मित्यत्र छन्दस्येतनिते ष्विन्दुर्धर्त्तायां वासिष्ठे रहस्ये च योधा बृहति वाजयुः सदोवनाया मन्तरिक्षे सजू-रग्ने बृहति विसर्ज्जनीयाकारौ जीराः सैन्धुक्षिते निकामवितश्शृङ्गयोर्ज्याकाः प्रोषुवत्सास्वःकारो गोमन्नः शुध्ये समुद्रः प्रथमः स्वर इमाउत्वायाꣳ श्यैतनौधसयोः स्वः शब्दः पूर्वः पूर्वे योक्ते स्वः शब्दस्यैवातिहारप्राप्ते लोपः क्रियते सिष्ठवैशोकयोश्च योक्ते चोत्तरयोर्मरा-येऽभ्यासे प्रत्यये विसर्ज्जनीयस्य चालोप मेके वि-रामे ॥ ४

तकारलोप उच्छन्दः पार्थुरश्मे यदुदीराया मि-लान्दे च वर्च्चे प्रत्यये परिमड्विषत्स्वासु हारायणे दृढाचित्स्वासु वीङ्क्ष्व्यासे प्रत्यये वोवित्सनइन्द्रायाꣳ

सौमित्र इन्द्रोमदाया मिच्छब्दः पार्थुरश्मद्वितिहिङ्कार-च्चौययोस्त्वमिन्द्रपरित्ययोः पुष्टैश्वामित्रे प्रसुन्वान-द्वितीयायां तवेत् प्रत्य-बृहति मकारलोप उत्स न कन्दैर्घेभ्यमिद्दीत्यच माऽसूर्य मायास्थे सातमिके लवायां मनोषां च्चौद्रेषु सहोदैर्घमरायवैराजर्षभेषु स्वसामैटतेभ्यासे प्रत्यये सई चिकबृहति पप्रौ यज्ञाबृ-हत्युकारलोप उपदृगयऽसूर्याया मैटत उत विषाद्ध जनितायाऽ श्यावाश्वे यकारः परिष्टोभन्त्येत्यस्मि-ञ्छब्दे दवि-च्चौये वा शब्दः सफे प्रियन्दे वायां प्रथमतृतीययोर्विकल्पयोरकारः सनैमिवाया मदे वऽ शुध्यतैतष्कालेष्वघायोर्वारे प्रथमेभ्यसः चुल्लका-श्चौगवयोर्वृद्धादचरद्वैटन्वते प्रथमे इयुः सिमास्व-चरन्नब्रुवऽस्त्वाष्ट्राद्ये ग्नये च्चौय आकारस्तन्वावि-माया मिहवद्दाम इकारः प्रसोमाश्वे व्यञ्जन मप-राङ्गं विरामे लुप्यतेभ्यासे च नैर्मयेर्षसाज्जुन-च्छभूस एवामृता चार्के आकारोनुनासिको वृद्धः सर्वतारेव वैखानससन्तनिषु ॥ ५

आउवाव्यवहित माउ भवति सर्वं पदान्त्यं च व्यञ्जनं लुप्यते शाता२३ उवा३ भवा२ सियो३ वा ऊ३ ग्रा३ उवा३ शर्म महो२३४ वा३ यू३ जा३ उवा३

वाजेषु चो२३४ वा२ मघा३२ उवा२३ एवञ्जाती-
यान्यनाउभावो भृगणवतरे रेत: श्येनेषु पनः सन्त-
निन्यशिश्रयु: प्रेवङ्गार्गव औष्ठ्यस्वान्तःपदिको नाउ भवति
सर्वत्र यथा मा३न्द्रो३ मा२३ दा३ यता३२ आ२३
उवा२३४५ ओणन्तो२ गो२ भिरू२आ३उवा२३ मकञ्च
न योनिं सोमसाम्नि सीदञ्छ्यना२३४हा२इ ना३
या३उवा२ नाईमा३उवा२ सुनेतसौपर्णऊर्मिणावाम्-
मैधातिथयोर्वर्ज सदस्यवप्रवद्घत्सामराजेषु स्पर्शान्तम-
लोपो यथाद्युम्ना२ निमा२ नू२ षा२ णा३४ माउ
सहस्रिणा२ मा२उ घाजिह्विया२३४ मा२उवन्मधुमा३
स२ वीरिया२ मा२उतिरेभा२ नाउधृता२ वसाना२:
पा२ रिया२ सौ२ निर्णिजा३ मा२उ श्येनानयो२नी२
म्यार्त्तवा२न्ता२ मा२ सदा२ दा२उ न तिष्टुप्शिशुमु-
द्यति सो२ मो२ वा२इरा२३ जमनू२ रा२२ जनिष्ठा२
१उ रहस्ये च न सर्वं माउ भवति व्यञ्जनं च न
लुप्यते यथा वाजीयनित्यवत्सातीषङ्गसिमासु यत्राउ-
भावो व्यञ्जनलोपश्च तद् वक्ष्यामः स्वरान्तः कण्ठ्यः सर्वत्र
त्रिणवे सहस्रिणा मिति यज्ञावापत्स्ययोरङ्गारैवतयोर्व्यं मः
कारस्य रैवते सिमासु सर्वं माउ भवत्यन्तगन्ते छान्द-
सीषु दिशोवसोरारणाङ्गोनामन्तगन्तेषु चाचारित्यस्य शब्दस्य

रेफलोपः स्वरघोषवत्सु प्रत्ययेषु ज्योक्कः शब्दस्त्वो त्वꣳहे स-
कारलोपः अवस्तमः साह्वान् विश्वायाꣳ सꣳहिते सुश-
स्तिभिरिलान्द्द्वितीयायां मानस्तरभिजमवर्त्तथादौ
लोपः पराङ्गं वा सुहस्ता स्तावे त्रीयस्य लोपः पराङ्ग
वेन्द्रायेन्दविति क्रौञ्चे वलोपः सन्धावुगतिर्विरते द्वियं-
कारसंयुक्ते विक्रुष्टे पूर्वो यकारः प्लुत आकारः सम्प-
द्यते रयिꣳसामश्वा३आ२या३यि क्रौञ्चे निधनत्वात्
पावार मानार अवा३४५ या२३४ पायाशब्दः क्रिण्ड-
पाय्योमहेनायां च प्रणपा२त् कुण्डपा२या२४५या३ः
सत्यश्वसि वाय्य अवृद्धस्तोभात्पर इकारः सम्पद्यते
दा३यिꣳसो३मश्वौ२हो२ वाहा२इ या२म् ॥ ६

अनुस्वारः स्पर्शः स्ववर्गीये प्रत्यये रेफस्पर्शोष्मभिः
संयुक्त एते शब्दास्त्वयोन्तःपदिकाः स्तोभव्यवहिताः
सर्वत्रातिह्रियन्ते स्तोभान्ते विरते लोपः सन्धावलोपो
बर्हिषितर्तुराणापिशङ्गमोशानकृद्घशꣳससराꣳसिसꣳ
हमꣳहत्य वञ्जातीयान्यतिहारप्राप्तं व्यञ्जनं लुप्यत
आनꣳश देव्ये ज्योतीꣳषि वृषन्नदर्शि वारे वर्पसो-
दर्शतेत्वान्देभ्यसः स्वारे पर्णे प्रशꣳसन्ति विशो-
याभ्योगवयोर्हिन्वन्ति विशीये मन्दानङ्गीर्भिर्जनित्रे
धर्म्मे दैर्घे बिन्दुः सिष्ठं इन्दव उद्वꣳशीये कर्म्मवत्सा-

यर्वणे सर्वं तन्दुक्कार्त्तयशे स्वरान्त मेके विसर्जनी-
यान्तं वा स्वासु भरे यन्तुरं लोपः पूर्वाङ्गं वा कश्चित्
पदान्तो लोपः प्राप्नोति ह्रियते कश्चित् पदान्तः पूर्वाङ्गं
माप्नोति ह्रियते वचनात्प्राक् स्तोभस्य स्वरान्तो विरामः
स्तोभान्ते विरते लोपः सम्भावल्लोपो जिष्ठा अधयद्दि-
मामा९ सदोविशोयोत्त्वेधयोत्त्वेधयोः कुत्रिदस्वासु मार्गी-
यवे चिक्रदृत्यवमानाभ्यर्षसीत्यत्र करवतरे पुरमजीजनो
हि देव्यं स दुरितायै ददति देव्य उषर्बुधोग्नेविवस्वदैव्ये
गिर्वणस्त्वयाभूषन्ति मानवे सत्पति मिन्द्रविश्वायां
लेये जम्भे च त्वामिद्वीत्यत्र मध्यमाउवाव्यवहितं छिद्र-
मैधाङ्गोरूपेष्वृतमाउवाउवाव्यवहितं पार्श्वसन्ताच्छि-
द्रमैधाङ्गोरूपाग्ने स्त्रिणिधनेषु ॥ ७

शवसः सञ्जये सरद्गौतमे निष्कृत९ रुणसाम्नि
वृषो अचिक्रायां वयु मपघ्नन् पवसायाङ्काचीवते ध्यम
मैषिरे मरुत्यवमानो रथीतमायां कूलीयसन्तनिषभेषु
दूराह्वन्तीये प्रथमे रसं मार्गीयवे हयत्व९सोमासि शा-
म्मदे द्रि९स वह्नितायां वितशृङ्गयोरुभय९ स्वासु मैधा-
तिथे सं मविचाया९ सामराजे तद्यज्ञायथाद्वितीयायां
बृहद्रथन्तरयोर्यच्छन्दस्तन्न वहहतीन्तरे प्रत्यस्मै-द्विती-
यायां धत्विषीमायास्च वत्सासूतप्रशं९सायां विशोय-

ञ्चीययोश्चित्तदद्यायां वन्तीये महद्क्रान्वासिष्ठे रहस्ये च माभेम बृहत्यहि९ स्वारे पर्णं घतः पार्श्वं मेषु चायां नप्त्रोः परिप्रियाया९ षूत्नौसायिवयोर्गीये चर्षणीयं-ओजिष्ठायां ज्योतिरौपगवे पवमानो अजीजनाया मर्वाङ्न्निलोप मेके कावे विते श्रुतिं युंद्वाहि केशिनाया मुभयतः प्रभोः शैखण्डिने हरिं वोञ्च शाक्वरर्षभे भीके विपः स्वः सर्वत्र यथा स्वर्विदः शाङ्कुनि साहीये च स्वर्विदा नामैधे न स्वे प्रत्यये सिष्टन्नैशोकयोश्च सिष्ठ-न्नैशोकयोश्च ॥ ८

अक्षवादिपदान्तात्स्वरे यकारो व्यवधीयत उप-दान्ताञ्च वकार१ विकर्षे सर्वत्र चालोपः सन्धौ विरते लोपो३ बोधिया३ त्रिवरूथ९ सुवस्तया एवञ्जातीया-नि न प्रतीनि वर्त्तं जठरेषूहल्कावावासिष्ठाभिक्रन्दार्केषु पृणातु महामित्रवाष्ट्रीवितेषु येवास्तजन्ति लौशशैख-ण्डिनयोरदर्शि श्रुध्ये वृत्रेषु सप्तहे ह्यन्तस्थपरे तु लोपो यथा काष्ठासुनरक्त्वा२ङ्का२ष्ठासु आ२३वतः स्तोभ-व्यवहिते त्वलोपो ह्यन्तस्थपरे यथा भीकषूक्तयोरैटते त्वभ्यासे प्रत्यये वृद्धात्परौ यूौ लुप्तौ तन्वा२गिरः सुष्टु तयो२वाजया२३४त्नौ२ आ२जिघ्रगा३द्वसू२रो३ आ२३४ तू३षूआ३ एवञ्जातीयानि न भूम्युत्वासंचारे स्वायु-

धोत्रे सिन्धूनां मरुतामिनौ स्वाश्वौशने च स्वश्वो नकि-
ष्टुद्रथायां प्रियासितयोर्मंदेष्वस्येदिन्द्रायꣳष्कालदास-
योर्यज्ञायस्तु सर्वत्र बृहद्वाक्प्रवैराजपदनिधनशुद्धी-
यवर्जं नदीषु प्रियः सूनायां यौधाजयदैर्घश्रवतरेषु
धर्त्तायाङ्गावत्वासिष्ठाभिक्रन्देषु सतेषु त्वयाभूषायां माधु-
च्छन्दसमानवयोर्वृष्णौ प्रमꣳहिष्ठीये वनेष्वर्षासोमा-
याꣳ शाकलवार्शसन्निवर्त्तहरेषु ॥ ९

पृच्छेषु सुज्ञानेस्वाध्यः सोमाः पवन्तायां वितमधु-
निधनान्यौगवषेधज्ञीयेषु संवरणेषु प्रबोयायां प्रवह्लीश-
धिसारथ्यपामीवसुसूनि पवमानरूचायां विशीये मत्स्येषु
दानाय वार्यायां लेयश्रायन्तीययोः कविमिवायां चौ-
शने व्यश्नुहि संज्ञारे पिबात्वस्यवर्त्ताभिनिधनयोरव-
न्त्यस्य सामराजे स्वस्तये दवि-द्यौये दीया-द्यौये स्वाहुतः
सदुद्रवायां वारदेव्ययोर्वृहति च गीथे दीर्घवृद्धोपहित
द्रूपदान्त आद्भूतोकाराकारयोः प्रत्यययोः सन्धौ य-
कार मापद्यते गतिर्विरतो वा३यस्व्यद्रो२३ पवमाना-
भा३४याषां३४सा३ एवञ्जातीयानि नार्षसि पुना-
नायां यथा गौङ्गवाभीवर्त्तयोर्भवीयसी प्रमꣳहिष्ठीयेस्व-
न्त्युहꣳशपुत्रे विश्वान्यर्य्यआपर्सैंटतबोधीयर्षभेष्विन्द्रा-
यच्छन्तिसुचस्वरन्ति नैपे दधि-यज्ञीयक्रौञ्चयोः स्य-

ष्विनोर्बोधीये धाह्यग्ने कमश्वे स्यतमा सहोर्दैर्घ-
षभायोर्वैराघि त्त्रीयस्यावाश्वयोरेकारे च यकारं या-
मोहृतोर्गतिमाऽश्व पदान्तःसन्धौ यलोपो विरते रस-
ता३इ येर३स्यापरा२३ये२३ वमता२३ये२१ एकारादः-
काराच्च भोगः क्वचिदिकारा दोवैकारयो रेकीभावे
लोपः ॥ १०

वृमन्तःपदे तालव्य मा भवति हाईा स्तोभे प्रत्यये
प्रतिभागं न टा२१ हा३इ प्रप्री२१ वयमम्रतञ्ज्ञाता३ २३
वा हुम्माइ महाहस्तीदचा२३हो३ एवञ्जातीयानि न-
ह्निवितवद्यौरिन्द्रायाऽ सैाभरे चिक्रमृज्यमानायां
रभ्रोत्तरवाजजिन्मन्तेष्विव दुहानायां पृश्निमन्त्योर्गाय-
त्त्रिवायां च त्वाष्ट्रीसाम्नि कनितिस्तोत्राचायाऽ सैन्धु-
क्षितैाशनयोः सऽहिते त्वा भवति वारे सर्वान्तःपदन्ना-
भवति स्वास्वा भवति निमर्त्तग्राहने विष्णवद्रत्येतैा
शब्दावर्षासोमायाऽ शाकले वरिवः सनइन्द्रायां कैात्से
पव्यध्वर्यैा सार्के सवीरायां वैश्वामित्त्रे डिन-द्वितीयायां
त्वाऽरिहन्तीत्यत्र च त्वाष्ट्रीसाम्नि रभिसुषावसोमायाऽ
रैरवे रहस्ये च संक्रतिनि गैाशृङ्गे स्वर्विदः सुम्नेषु
मानस्तरभीभीत्यत्र जमदर्त्त्रषेधर्यामाशिवासः प्रहिन्वान
इति च पूर्वे जनित्त्रे गीर्भिरुत्तरे श्रैाणा हविषि सवा-

ज्यचायां भवे जिपवमानस्य जिघ्नतायाच व्यथयदिमाया मुत्सेधे हिन्वाभिसोमायान्तनिभीशवयोर्हौर्घनिषेधे पुरोजित्यां जम्भलरयोरनाभावस्तालव्यस्थान्तःपदिकस्य दीर्घशब्दस्त्वा भवति पुरोजित्यां जम्भे स्वरे चा भवति सहावाण्इन्द्रेत्येष शब्द आनस्तेगन्तुमत्सर इत्यचावृ मप्या भवति जितीयो दी क्रौञ्चे षि परीतायां माधुच्छन्दसे वरिवः सनइन्द्रायां मार्गीयवे जरि स्वारे पर्श्वे मदिन्तमदिष्ठनीगि हाविष्कृते यितवे श्विनोर्व्रतान्तरे ॥ ११

पदान्तस्था भवति मातिग्नितमधायां कमश्वे धैनै वारोत्तरे त्रीये स्यन्दते क्रावते चर्षणोरधोत्यर्षिहावि ष्कृते वरिवोधायां तु व्यभीनः कौत्से वृषेस्मान् पिबासुतायां पृष्ठजमवर्त्तयोः पवन्तेभिसोमायां मैधातिथे निष्कृतए रुणसाम्नि वृषो अचिक्रायां परीतायां च परिस्त्रवाधिसोम उष्वा वाम्रे सुष्वाणायां चाश्वीगवे भिप्रि-त्रीये चोक्तः कपे स्वासु नैपे विद इन्द्रसुताया मुद्वएशौये मधुनिधने त्वचि सुष्वाणायां जितवे पुरोजित्यां प्रते शैखण्डिने पातवेनै सएहिते शसयेतं तन्वामदायाए सएहिते गविष्टये भिद्र च्यावने दिवे त्वाष्ट्रीसाम्नोः सहस्रधारायां मादेनै

रेवतीष्वति-छन्दसायां महानाम्नीष्वभि ष्वैते तदिदास-
तृतीयायाम् ॥ १२

॥ इति सप्तमः प्रपाठकः ॥

यकारे च प्रत्यये ह्रस्व मन्तःपदे तालव्य मा भवति
यत्र यकारसंयुक्तं विकृष्ट९ स्तौ२षि२मित्रमिवप्रा२३४
या९सो३मा२३विश्वा२चा२३४या३ एवं जातीयानि
न रथ्यं महस्तवानायां काण्वत्रृहति रहस्ये च बृहति
नर्यः सनो हरीणाया मित्यवैते वाम्रे च परीताया मत्यो
धर्त्ताया मुहद्भार्गव ईयतुस्त्वमिन्द्रप्रतूर्त्ति ष्वित्यवाभी-
वर्त्ते पीयन्त्यभ्रातृव्यद्वितीयाया मामहीयवे पीयत्नवे
मानइन्द्रायां वारे स्फिग्यं माभेम बृहति हीयमहे
नोत्तरयोर्वाजीये तृतीयमृतस्य जिह्वायां ना भवति
सर्वत्र चीये त्वा भवति पदान्तस्था भवति शर्मणि प्रदै-
चीये काण्वे रन्तास्वरे च वियस्तावद्ध मथा भवति
प्रियः सूनुर्वर्वतरे सम्मील्ये जिह्वं न क्रतवस्याधिया-
बृहणाध्यैनौ वारे प्रथमे पवस्वदा सुम्नानेङ्गादा
शङ्कुनि विष्टया वाचःसाम्नि वयुना वासिष्ठे दिवि
यज्ञायथोत्तमायां बृहति क्रत्वस्तौरश्वत्रसि ॥ १

अवौकारयोरनन्तरः स्वरनीचाद्ययोः प्रत्यययोः

सर्वं तत्र मा भवत्यन्तलोपश्च यथा भरनार्मेधैश्ववाहनि-
हत्रसाम्नेषु न क्रुष्टोतविशीययो रथापवादा राग:
स्वःपृष्ठनैपातिथरश्मेषु संग्रभा तून इत्यचाकूपारे-
दूरेदृविराट्सु देव्ये तकार: परिस्वानाया मैधवाहे
मकार: कार्त्तयश मन्तयो रापृष्ठ्या सिधे रथी नार्मेधे
प्रायश्चित्तेषु पार्थुरश्मे स्वाशाःकारवर्ज मोकार:
सखाय: सो शाक्तो मदाय तानवे वायुमारो भासे
महा श्वारसि वाशे सूर्यमरो नैपे सुषावसी च्छन्दस-
द्वैगतयो स्तोगो द्वैगते सोमसुत्वाने भुवनो टते
पिन्नाबोत्सेध उवसं तु न सर्वत्र भवति ग्रहणादा
भवत्युभ: स्वासु मैधातिथे न:सू वारे प्रथमे प्रिय:
सूनुद्वैगतगौङ्गवयो रिन्दुर्गौतमसाम्नयो रकू सिष्ठप्रिये
यदिन्द्रचित्रायाः शिशु सर्वत्र ॥ २

ऋगन्तीय: स्पर्श: प्रथमस्वरो नामि विसर्जनीयश्च
ना भवति तत्र चौहो शब्द: प्रथमात्क्रुष्यते सदादा-
२३४ ह्वियामा२३४स्त्रियोरा१२३४ एवं जातीयानि देव्ये
त्वनृगन्तीय: स्पर्श: प्रथमस्वरो नामि विसर्ज्जनीयश्च
ना भवति तत्र चौहो शब्द: प्रथमात् क्रुष्यत आ३वि-
तार जरा३इ तृणा३मा२३४आ३हू२महिश्रवस्यवा२-
प्रा२युभा३इरा२३४ तुरीयन्त्वा भवति शिशुन्देव्ये स-

चमा२नः समु२द्रं २तु२रो२या२ औ३४हो२इाई रहस्ये लृगन्तीयस्यान्त्यगन्तीयस्य स्पर्शः प्रथमस्वरो नामि वि-सर्जनीयस्य ना भवत्यृगन्ते त्वेव प्रथमक्रुष्टस्तोभद्र्लान्द-द्वितीयायां तृतीयाद्रिन्यामौहोवायां चतुर्थस्थो वृद्धः पदान्तः सर्वत्वा भवति यथास्यशिशुमकान्वासिष्ठेषु श्यैतनारयोश्च तत्रापवादो रागोघ्न बृहति मस्यबृ-हति स्वरः प्रत्यबृहत्यमेग्ने बृहति जुष्टो यत्रावृहत्यु-ज्जीये पूषा बृहति गावः श्येनोत्यः सिष्ठे वृषो चायास्ये वृषा२३४औहोवाइन्द्राचक्षःपृष्ठा३इन्द्रो२३४ औहो२३-उवर्णं तु न सर्वत्वा भवति ग्रहणादो भवन्तीन्द्-खिकबृहति शिशुम् सर्वत्र ॥ ३

आकारोन्तःपदिको ग्रहणादो भवति नमोघो व्यञ्चा म्ना२इन्नमा२३४औहोवा३ तोमघा३४ औहोवा२ तालव्यं च द्वितीयात् क्रुष्टं तालव्यम् हाईशब्दस्या-भवत्योस्तोभे प्रथमादौ प्रत्यये श्रिया२३४ औ२३४ वाहा२४औ१४हा३४औ२३हा३हाई स्वासु नकारः आयन्तीये दा२नाया२चो३ ऊं ३दया२औ२३४५ वा२ शुकारमकारौ च वृध्याल्मिबास्वरम् सर्व मा भवति या-स्तोभे प्रत्यये वच स्व नादभन्नित्येवाङ्गतीयानि मा२इ तेवचा२२या२३४ औहोवा२चा२नादभा२२या२-

३४५औहो२वा औशायवर्योस्वो भवति कविक्रतो२३ या२३४ औहोवा३ ऋतावृधो२ या२३४ औ२ हो२ वा३ पनिष्टयो३ या२३४ औ२ हो२ वा२ चरेवारिहत्या० सर्वं श्रुधीहवाया० स्तोत्रभ्यश्चौकारोन्तःपदिको ग्रहणादा भवत्येकारहकारयोः प्रत्यययोः कावयामवाम्नसोम-सामसु नामहता२३ड यमधिराए३ दुरिता३ सा२३४ ए३ सुषा३ हो२३ड वसाहो२३ श्येनी३ नाया२३४ हा३ अग्निगविल्यवात्व मौकारे प्रत्यये रयिष्ठे वृद्ध० सर्वं मा भवत्यौहोस्तोभे सस्वरे प्रत्यये रेवतीन्नां औहो प्राणाशिशा औहो सा औहो नेन्द्रस्ते सोनहितेपूर्विश्व-स्यटूज्योतिष्कृणोचोदेथा०सूरागश्च पुशब्दश्चेलान्दे रथ-न्तरे सर्व मा भवति स्पर्शगभस्तोर्वर्ज्ज मोस्तोभे प्रत्यये-ग्निनोर्व्रतपूर्वं च तालव्य० शाक्वरर्षभे त्वोष्ठास्पर्श वर्ज मे स्तोभे प्रत्यये वृषणिसर्वं मा भवत्योवाया मनन्तर-स्वरनीचाद्यायां प्रत्यये प्रत्यये ।। ४

ऊहगाने योनिवत्स्वराः स्तोभाभ्यासविरामा अन-भ्यासस्तुतच्छन्दसां विकारा हि प्रत्यच्चपरोचादयस्तेषा मुक्तो नियमोऽतोऽन्ये नियमाश्रयाः पर्वाश्रयाश्च तेषां नियमाश्रयाणां यथैतच्चतुर्थमन्द्रातिस्वार्य्याणा० स्वरा-णां ह्यन्तर मुच मुच मुटूहो दीर्घकर्षणस्य वृद्धिर्नन्दायाः

त्सिव्यकर्षणाङ्गतेरेकारभावमाम्नाया एकारनिवृत्तिः स्तो-
भाना मुद्धारो गणगीताना मन्ते निधन मेवमादयो
नियमाश्रया अथ पर्वाश्रयाः कृतस्वराणि पर्वाणि
परिमिताक्षराणि छन्दसि तेषा मूहे ज्यायसि छन्दसि
यथान्याय मावापः कनीयस्यादितो लोपः पर्वणाॅ
सङ्घातानां च शुर्मदायास्तु न्यक्षराया उपाद्यलोपो
वारे लेयप्रस्तावसहृश्रेष्वविकारो गायन्त्याद्यायामा-
ष्कारणिधनवदिन्द्रायाह्य त्तरयोर्वयमुत्वावत्काचीवत-
उच्चावद्दे व्य आकाराकारयकाराभ्यास एनातंवोग्नि
मिति निधने च नित्य मोत्वङ्गौषूक्ते तूचातायामूनेषा-
शब्दाभ्यासात्सम्प्राप्तिः क्रौञ्चे च हिशब्दाभ्यासाद्वर्ते
चेकाराभ्यासात्साहीयगूर्द्दपुत्रेषु चातः परं पर्वविका-
रान् वक्षामो यदधिकृतॅ स्वरतः पर्व तद्यथा योनि-
स्वरविकाराद्यदन्यत् पर्वापद्यते तत्तेनैवोपदेक्ष्याम आम-
हीयवमध्यमाया मुग्रॅशर्मा ररिमाताॅ स्वासु कम-
श्वोत्तरयोरेभिर्वर्द्धा प्रवद्धन्द्रा सायः प्रमध्यमायां तु
मरा मग्निष्टुन्नौधसे ध्यमायां मागायताम्बाङ्गास्वरोत्प-
तिश्च प्राक् प्रहूयसायाः श्यैतधसत्टतीयायां चानुष्टुप्सु
वायिश्यतातयां कावे स्वासु भिशब्दादकारागम उद-
पन्नायां च वाशब्दे च नित्य मोत्वं पोरुह-

न्मने सोत्रामागायताञ्जास्वरोत्पत्तिश्च प्राक्कृता-
याः ॥ ५

पृश्निनि तृतीयपादान्ते च दक्षसा पतिः कवी-
पृतातूतद्विषां पतिः कच्युत्तमे च जमवत्तें ध्यमाया९
रनोनुमा चदक्षसां पुत्र उत्तरयोर्नेमिस्त्वन्नां यमस्यु-
त्तमाया मुत्तरा तयानन्दामयन्दासोत्तरयोर्जरिसङ्गातं
कार्ष्णश्रवसोत्तरयोर्जुषे जनासदावृधां मार्गीयवे मा-
गायता प्रथमोच्चं प्रसोमप्रथमाया मस्यपत्वाद्ययोश्च
वृषाजिगप्रथमायां च घृतनिधने च्छतानुव मित्यत्र
स्वरागमो हविव९शब्दस्य चोङ्गाव इद९सङ्गातस्त्रिष्टुप्सु
पार्थवाराहवासिष्ठकुत्सरथीयादिषु वाराहे शुचि त्वावृ-
धन्ता तरुतां पार्थे तु वृष्ण्याये हौषौं प्रकृतावूहे द्वितीय
मनुष्टुप्सु त्वभु सङ्गात माज्यदोहयौतानयोर्जुहूसङ्गातं
विच्छदःसु च वैराजर्षभारिष्टयोर्वाम्रिध्यमपादयोश्च
दक्षसोतद्विषामत९ हि मह्ने प्रथमोच्चस्य चतुरक्षर
माद्यं पिबासोमां परं योनिवत्यष्टौ होत्तरयोर्वृष्णौ
तद्विविद्धां प्रम९छिद्वितीयायां वाघाह्नीयेंदेवां तद्विवि-
द्धावृष्णोमह्ना वात्सप्रे वृधन्तादेः कर्षणप्राप्तस्याकर्षण-
मूत एका च द्वितीयमभ्यासश्च चौद्रे तु वृणी प्रथम
मपुरोज्यूत एकायाश्च त्वावर९ साभ्यासं मानवयोः

पूर्वे च दक्षसा पतिः कवी३ शुर्मदा चैकर्चे लुप्तो-
पान्त्या तरे चैतस्या मेवान्यत्र शुर्मदायाः पूर्वस्या
उपान्त्यं नोचं भ्राभ्रवलाष्ट्रीसाम्नोश्च दक्षसा पतिः
कवी३ रस्योत्तरे शुर्मदेतरयोर्ज्ञातः पृष्ठाम् ॥ ६

शने प्रेष्ठंवाजुहोतामयोनावुष्णिक्षु च कूलीये
वैश्वामनसे राथीतमासव्यख्यदूर्न्दां वं३शीये गायन्त्या-
वाया मच्छाहोतारं व्यो चतुरक्षरशः परयोस्त्वक्षरे
ऽच्छा पश्चाक्षरे होता क्षरे द्वाऽन्यत्र सुज्ञाने निधन
मेकिने स्वरं वाचःसाम्नि स्वासूक्तमायां तृतीय-
पादादौ च दक्षसेतद्विषां लौशयोः पूर्वे वारवन्ता-
तुविशुष्मा मुत्तरे चतुर्थोत्त्वं द्वितीय३ हृस्वारूपयोश्च तथा
शार्गे तृतीयोत्त्वं स्रवे वारवन्तास्तिस्रस्तृतीये पादे द्वि-
तीये तूष्णिक्षु चतुरक्षरा प्रथमा द्व्यक्षरे परे पूर्वे
जनित्रे च दक्षसेतद्विषा मतंवस्तृतीयायां तवमाण्डव-
इदावासिष्ठे चान्नैव तृतीयाष्टमं वृद्धं प्रथमाया३ रुणा-
साम्नि च घृतवत्यां तिथे च योनावाद्य३ शुध्यमानवयोश्च
द्वितीयं विशीये ऽधयदिमायां भे प्रत्यये प्रथमोत्त्वान्तस्य
वृद्धिस्तद्विषापतिः कवि३ साहोये शता द्वितीय३ सङ्क-
र्षात्तथा सर्वत्र स न्यायो मन्द्रश्चतुर्थ मयोनावैडकौत्से
च वसुरुचाया मेवाद्यस्य लोपो वाशब्दे च नित्य

मोत्वं चिते च हाशब्दे मेधे चायोनौ बोधीये वच्यन्ते
वा मित्यत्र स्वरागमो मान्तश्च रागं द्वाविशीये स्ताव-
हारोपायावान्तास्थेदौ पूर्वौ हान्तौ ॥ ७

श्रीयत्तु विशीयाद्यायां तद्विविष्ठा वृणीमहां
वैच्छन्दसे समन्ते दिवा नक्ता प्रथमं द्वान्त्रस्य वृद्धिर्वि-
ष्टारपंक्त्यां किमित्विकवृहद्द्वयोर्वृणी प्रथमं त्वसो
दैर्घं परांङ्गं नित्यमाचार्यनियमात् पूर्वांगस्य वृद्देव च
पूर्वकल्पः शङ्कुन्ये षस्यध्यमाया मकाराभ्यासोग्निर्वो-
वाजीयद्वितीयायां चैकारे च नित्यं दीर्घत्वꣳ शङ्कुनि
कौत्से द्विशब्दो वृद्धः प्रकृतावूहे दीर्घः सर्वत्र संयोगे
हृस्वो वाशौं भिद्रोणाग्रꣳशर्मामिषन्तीकायान्तद्विविष्ठां
प्राणा सर्वासु मनाज्ये लुसूतयावायोरनी मुत्तरयोर्य-
ज्ञामहामित्रोत्तरयोश्चतुरुत्तरायां विधायां वाजीवा-
जापिबासोमासु तरे जनित्वे पुरोजित्या मुद्गीथाद्यस्य
दीर्घत्वं द्रन्वते प्रथमद्वध्ये वप्रिया मुत्तरयोर्वात्वतुरे
गीथाद्यं प्रथमोच्चं मागायतां द्वितीये च पादे सान्त्वा-
तन्त्वाज्योतिर्वरुणासाम्नाद्यान्त्यरयोस्तृतीयोच्चात् परं त-
मु तृतीयायां तु विभाक् चतुर्थी मध्ये निधनानि
निगदवृत्तीनि प्रयोगवस्त्वाधाराये गिरागिरा प्रप्र
नशꣳसिषं तस्य षस्त्रेत्यनुब्राह्मणꣳ स्वाध्याये देवता-

नामधेयान्यथ निरुक्तेष्वेके यथादेशं च कालवन्निनामनि प्रवचनविहितः स्वरः स्वाध्याये तथा शाट्यायनिनाꣳ समानोदर्कैषूदर्कस्योद्धारः पूर्वयोः स्तोत्रीययोर्महिनायां तूपान्त्यं पदम्प्रतिस्तोत्रीयं वाजीये सङ्घातैकत्वात्तथातिच्छन्दःसु नित्यवत्सासु त्रिकबृहति च पर्वैकत्वाद्दिमꣳस्तोमसमन्ते च द्व्यक्षरं पदꣳ संक्रष्टत्वात् ॥ ८

प्रतिस्तोत्रीय मार्च्चिकानि निधनानि स्तोभाङ्गभूतानि च पर्वाङ्गभूतानि च तथा हायिकारस्वारपदानुस्वाराणा मन्तःसामिकानि च स्तोभिकानि सामान्तिकानि सामान्ते सर्वत्रान्यत्र गणगीतिभ्यः प्रतिस्तोत्रीयं बोधीयधुराकमश्वयोः कण्वबृहति च निधनोपायान्ताः स्तोत्रीयाः सर्वत्रेडाभिरैडाना मिडान्ताः श्रुधियान्ताः श्रुध्यन्त्यक्समाः पगवयोरभ्यस्तान्ताः पुष्पाद्यरयिष्ठयोरुगत्यन्ताः प्रवद्दुहत्सामराजेष्वेकारान्ताः सुमाने स्तोभस्य सामाद्यः सामान्ते यथान्यायꣳ रहस्ये तूद्धारस्तस्य लक्षणोद्देशः पर्वाङ्गभूतस्यानुद्धारस्त्विरुक्तस्य सामादावाद्यं वचनं यथा भद्रश्रेयोरिष्टशाक्वरर्षभस्वाशिरामर्कसप्तहैकत्वषाणाꣳ श्रेयसि तु होशब्दस्य लोपो जम्भोत्तरसꣳस्तोभाङ्गोरूपाणाꣳ सामान्तेन्त्यं वचनꣳ संक्र-

तिनि स्तोभाद्यं वचनं प्रतिस्तोत्रीय मुद्भिद्बलभिदोः पूर्वस्यादौ परस्यान्ते भर्गस्य सामादौ स्तोभान्त्यं पदं वैराजर्षभे त्वन्त्यस्यान्तं वचनं यवत्वापत्ययोर्यथा ग्रामे वैराज इत्यादिः स्तोत्रीयान्तसर्वासु स्तोत्रीयाद्ये चाक्षरे मरुत्संयुक्ते ॥ ९

आज्यदोहानि प्रतिलोमानि तेषा माद्यस्य सामा-दावाद्यं वचन माथर्वणदेवस्थानस्वरान्तरितत्तौरश्रव-साना मविकारः सर्वौङ्कारोऽतोऽन्यत्र वैरूपे तु देवताना मनुङ्कारः प्रयोगसिद्ध्यर्थ मिहाथेड़ानाञ्चैकर्षे च देव-तानां निधनं तु सामान्ते सर्वत्र यल्लघीयो गुरुषु निधनैकदेशस्त्रिरुक्तानां मन्त्यं वचन मृषभे तु त्रिरुक्तं देवस्थानपूर्वयोर्निधनाद्यं पद मन्त्यायाꣳ सर्वन्दिवा-कीर्त्ये वैराजम्भ्राड्विकर्षेष्टास्वरम्भासे शत मादित्य-शसि सम्महे त्वाद्यं वचनꣳ साम्नोः पूर्वस्योपग्रहाद्यं पद मपांव्रते च गवां व्रते च कवान्तं प्रथम मश्वि-नोर्व्रतपूर्वङ्कारोऽतिक्रान्तो वैरूपशाक्वरर्षभपूर्वयोरद्वै-ड़ासामान्ते ध्यद्वाश्वव्रते हौ-हू-ह्वा-हौ-होन्ते षु चत्वारः सोमा वा औहोवात्मिवास्वर्ज्योतिः प्रथमोच्च मेकारा-दिकृष्ट मेवं पदायस्तोभाः परासु विधासु ज्योतिर्भाः शिशुर्वाजाश्वो सेध्य इति पादगीतिस्तुल्यापरयोरुद्धारः

सामान्ते निधनाय स्तोभाः स्वर्वत इति निधन मुपग्रहादिव्याहृतिसामानि पञ्च भूर्भुवःस्व सत्यम्पुरुष इत्येतासु पृथगग्निन्दूता प्रस्तावो मन्द्रे सोमस्विरुक्त आनीकयां तृतीयः स्वर्ज्योतिर्निधन मक्रुष्टैकाराद्य वथं सर्वेषा मेष विकारविधिरेतेन प्रदेशेनोह्यः सामगणः कल्पयितव्यः कल्पयितव्यः ॥ १०

॥ इति अष्टमः प्रपाठकः ॥

अथ विकल्पा रवउगतिर्मद्रमदोधनकामे पुरःस्वामूत्तरयोश्चारङ्गमानदेष्टे डरयिष्ठयोर्हिंत्वनादीदिहिस्वरा-मातान्नुवथंश्वामित्रेक्रौश्यमषष्ठं नवमात्र दीर्घे परयोर्दीर्घापरं नीचैर्ग्गं शृतीयद्दशमं क्रुष्टं सर्वत्र धर्मविधर्मणाः पञ्चाक्षरशो धनानि स्तावे हविष उत्तरयोः प्रथमे विराट्पर्यू च देव्ये गोथस्तद्दादिर्नवे निहोतातिधातुवारात्वसो दैर्घे गकारः शने राजन् प्लवत आसीफ तृतीयाया स्तुते न यानिबन् मध्ये जाम्नुतं प्रान्तयोर्वलोपश्चाद्य उच्चैस्तकारो यजिवाह इहायां प्लवते यशस्युत्तरयो रग्निन्दूता प्रस्तावे कवावहहल्युदा आ इति गतिः षभे काम्या त्वन्ना वारे पुना ववहहति प्रसोख्वतरे पुनाभिमा जम्भे चोत्तरयोः ककुभोर्विकल्पाः ॥ १

अथ भावान् प्रवक्ष्यामः प्रगाणां यैर्विधीयते। आर्चिं-
कं स्तोभिकञ्चैव पदं विक्रियते तु यैः। आयित्वं
प्रकृतिश्चैव वृद्धञ्चावृद्ध मेव च। गतागतं च स्तोभाना
मुच्चनीचं तथैव च। सन्धिवत्पदवद्गान मत्व माभाव
मेव च। प्रश्लेषाश्चाथ विश्लेषा ऊहे त्वेव निबोधत।
संकृष्टं च विकृष्टं च व्यञ्जनं लुप्त मतिहृतम्। आभा-
वाः स्व विकाराः स्व भावानूहेभिलक्षयेत्। एतैर्भावैस्तु
गायन्ति सर्वाः शाखाः पृथक् पृथक्। पञ्चस्वेव तु गायन्ति
भूयिष्ठानि स्वरेषु तु। सामानि षट्सु चान्यानि स-
प्तसु द्वे तु कौथुमाः। ऊनाना मन्यथा गीतिः पा-
दाना मधिकाश्च ये। योनिदृष्टाः समा येन्ये पादा-
स्त्वक्षरशः स्मृताः। आयेभावश्च नेदानीं दीर्घं यच्चैव
कृष्यते। कर्षणे तु निवर्त्तेते त्वायिवाया मुपद्रवे।
ओभावो दृश्यते साम्नैराभावश्च यथाक्रमम्। अभ्युदूहेन
सर्वत्रोहे गीती रहस्यवत्। स्वादिपर्वणि तिस्रायां त-
थैवान्येषु सामसु। आर्चिकं निधनं न्याये स्तौभिकं
वा यदक्षरम्। कृष्टाकृष्टम्भवेत् स्वार्यं मन्त्रोदात्तं दृधे
स्वरम्। मणाजनं सदह्नोना माविशासिविदेप्सुजित्।
त्वनाद्दयूं श्रियेतिभी रयिम्प्रियमभिद्विता। जसावस-
न्तमस्वम्मं त्सुतउडाः षिभिर्द्दयन्। न्यायादेतान्यपेतानि

श्वत एके हथेस्वरम् । वीभासपौष्कलाष्टेडरयिष्ठाच्छि-द्रधर्म्मसु । नैताश्ववतशौक्ताग्न्यौचतुःषडिडयोस्तथा । षड्भासे पौष्कले सप्त वौग्यष्टेडे पृथक् हचे । रयिशौक्ते वृषास्तोभे द्वे द्वे न्यायविरोधिनी । अश्वाग्न्यौगवयोः स्तोभधर्म्माच्छिद्रेषु पञ्चसु ॥ २

तृतीयोच्चान्त्यं हि स्तोभे दीर्घीभवति न वाम्ने स्पर्शान्तं व्यं च कौत्से चेकारोकारौ नश्चाध्वयवम-ध्यमायाः सनद्वन्द्रायां चौद्रे च क्रते चापदान्तो विशीये च पूर्वे शूष-त्रिणिधने चायास्ये सेधे षिणोदनः कामे च प्रथमकल्पे सर्वासु सौमे स्तावे कार्त्ते च पर्यश्विनोर्व्रतोत्तरे शङ्कुन्येकार ऋषभे च शाक्वरे सम्मील्ये लघुविनते त्वे कालेये महामहीयवे च क्रौञ्चाभिनिधनसप्तहपयउत्तरधर्त्तौद्वासदस्यवेषु वृ-ष्ण्यादिर्जितोश्च पूर्वं संयोगे मपोत्तरे स्तोभे क्रौञ्चे त्व-संयोगे नात्राविनेमिः कौत्से हि-शब्दः मवद्भार्गवे कृष्टादस्याद्वकारः स्वारे च पर्शो हारादू योनौ त्वम्-च्छङ्ग-प्रथमायाञ्च द्वितीयं सन्तः षं जनित्रे रथ-न्तरवृषाश्विनोर्व्रतेष्वोस्तोभे दैर्घं व्रात्योत्तरयोश्च येला-न्दतीययौक्तेष्वौकारे स्तावाद्यं कावतरे वैघने क्रुष्ट-वृद्वयोर्मध्ये रैवते च वृष्ण्यादिः साहीये च शतायास्ता

वात्सप्रे द्वितीयान्तः सूर्य्यस्य त्वेभिसामाद्यायां माद्य-
स्यान्त्यस्तोधीये मघोना मेके देव्ये दीर्घौ न्ववा-
वितदेव्ययोः त्सारशब्दः स्वरयोः ककुभे दयः श्येने-
नद्ध दीर्घत्वम् ॥ ३

श्यातेत्र होष्यन्तो वृद्धो शतमवे वारान्तोषतयश्च च-
दन्वते चाविप्रोहतिस्तावारस्वरान्तो नगशूपधान्यन्ते च
त्वाष्ट्रीसाम्नि हारादिर्योनौ नवपूर्वपज्रूणसामशोक-
पृश्निषु च नौदे दिरित्ते शब्दा अरिष्टे च ये वी
इत्येतौ शब्दौ समुद्रच्छन्दसि चोत्तायां द्वितीयस्थमरप-
विराजे स्तावाद् गेष्णादिरवृद्धः संज्ञारवैश्वज्यो-
तिषगोराङ्गिरसेषु नियां तोदे ज्यवे व्ये द्विस्तेजयत्रिणि-
धनसाप्तमिकेषु चथे सावादिरदेवः सिष्ठे तद्विङ्गाया
अन्तो योनौ रुणसाम्नि चरूपदो विशीयाष्टेडेषूर्मिणा-
ह्रावो जम्भे च तृतीयो दादि निंवे च पूर्वं दोवि-
शीये हारादिरस्थाः शृङ्गे च कौत्से वे सूष्वा-चतुर्थ-
मेकोना मन्ते राधाया अन्त्यानि वर्द्धन्ते स्पत्योत्तरयोश्च
तिरोवत्यां योनिवदाद्याया मन्तेत्र सर्वासु घृतनिधना-
यायां च शूवत्या मन्तवद्धान्त्ये होपरे द्वे शाविचोनाया
माद्य९ सङ्कर्षाद्द्वितीय मन्यस्यां वारे च नौ राहे नौ
तृतीये दे वृधन्ता तरुता९ श्रीवासिष्ठउतद्विषाम्पतिः

कवीमयन्दासोत्तरयोस्तृतीयोऽश्वाच्छतोत्पत्तिष्कलेजास्वर उपशिक्षायां प्राक् प्रहूयसायाः क्वथायास्ये पुनान इत्यव सोम० सोदे वृद्धे धौ चेन्द्रमच्छायां इगच्छराया मादि-मीढे मोच्चं नीचं हुयच्चं पितापवमानामाशिवासस्त्र जयसितश्चैतेषु शपेव चतुर्थैव वपा मन्द्रे ॥ ४

आदिद्दोदा तस्याहदुक्थरूपयोर्द्वितीयद्धं प्रत्युक्रान्तं प्राप्तं चाभिगीतं भीशवगतश्चैताजिगोत्तरनिचस्वारयामैषिरवास्रवार्षाहरवाचःसामहत्कप्रियेष्वग्र-र्मिस्त्रिहूंन्वन्नपोत्ताश्वावोधीये सर्वमयोनौ नित्ते च हविषि च गीथे न प्रवाज्युत्तरयोस्त्रेयानिधनयोरभि-हितपौष्कलहव्यगारमानववन्तीयभरपर्स्युयामसु ॥ ५

अथो स्वभावो वृद्ध माउ यत्पक्रत्या तस्य वचन म-पदान्तः समानं चनरवे विकल्पे प्रियावसु सिसीदतु भूरितेवसु न संल्लनिनि लिधनत्वात् सोम्यं मधु व्यो-कारः पादमध्ये येन्दो बभ्रो रेतरे वसो वसूनि दान्ते यह्वो धिगो स्तावे मिन्दवौकार उरा विसौ मधौ मतौ तस्थौ योनौ चाभे ॥ ६

रथन्तरे स्तावाद्य माघायां वृत्सर्वत्र सत्तरे तुरीयं नीच० सर्वत्र च मन्नजातोदब्धः सुदेवो वः षिधे च तृ-तीयचतुर्थे द्वे दुरितावसतश्चाजावितोत्तरयोरेन्द्रयाहि-

पूर्वयोः पर्युषु चोपान्त्योच्चां पतिगिरासिते च देवाव्ययोस्तृतीयोच्चान्त्य मग्नि मी सेधे चाभिसोमा-व्ययोः पिबासु चाद्यायां चनदे च स्वास्वाद्ययोर्डिने चतु-र्थोच्चानि यथा योनावाद्यं द्वितीयायां प्रथमे निघाता-न्मन्द्रे तृतीयायां चप्र तृतीययोः कौल्मलबर्हिषासिक्षणुषा-माशुभार्गवे ल्युत्तरोह्वा पञ्चाद्यरोच्चाद्ययोर्योनिवदस्य ध्यमाया मातृनाकूपारे चाद्यायां द्युत्तरोत्तरयोरच्छिद्रै-कर्चेणोर्नीचः सेतःशब्दश्चावृद्धो विचे प्रत्यये वृद्धः सिते वृण्यन्तः चीवते द्वितीयपादान्त्य मद्वितीयस्वरं विशीये मोच्चादिर्नीचो नावहिल्वन्ति सर्वासु चीयच्चाद्यायां चीय-दन्यदुच्चं सकृष्टं च तृतीयं नौ द्वितीय मुत्तरयोरेका-न्तरणिधने च जये शता द्वितीयम् ।। ७

गूर्द उत्तरयोर्होता यन्ना मृतुष्ठा चीयवत्तौरे प्रस्तावो योनौ प्रत्नं सधस्थायां यजिसङ्घातवत्पूर्वार्क-पुष्परयिष्ठयोः स्तौभिकं पर्वानुपादं सामान्ते सर्वा-ग्यार्चिक मकृष्टं सर्वत्रायोनौ वैधृते ह नौथे रे च द्वितीयं वाम्रे चायोनौ च्छिद्रे भिसोमाद्यायां नीचं ध्यभ्यासे चीयच्चं विशीयान्त्यायाम् स्यामान्माभयोरे-कत्वान्माभा संपूर्यते दिस्वरे विराम मेके रावबृहति च शतान्माभयोरच्चोरूपध्यमाया मुस्थ माउवायां वि-

रामखिडनतृतीयायाꣳ स्तावे भ्यासाभाव मेके रंघोषे
वा विसर्जनीय आम्नायसिद्धत्वाद्बृहती-क्रौञ्चे तृतीये
पादे तृतीयोच्च मभीवर्त्तवद्द्राणतृतीयायां च रक्षाश-
तासूष्वे पतिः कवीषु चान्तरस्याक्षरस्याभ्यासः सर्वा-
स्तृतीये दे क्रुष्टद्वयोर्मध्येगीतं लुप्यते कौर्त्स्य-
शःसꣳसर्पेषु वान्तेरयतिशब्दौ नीचावरौ च यत्सर्व-
त्रासूर्यꣳ शौरते हुम्मान्नीयवज्जारादिश्च गौशृङ्गे सञ्ज-
याभीशववैयश्वसाध्रादिषु लक्षणसिद्धत्वात् द्रव्यान्तर
एकं पर्व भवति नमसा लेयवच्छायन्तीये मराये
हाउवान्तः क्रुष्टो वैराजे चायोनौ विनतप्रतिषेधो
वैरूपे तु देवतापदं देवतापदं निधने ॥ ८

अग्नस्त्रिणिधन उष्णायां द्वितीयपादद्वितीयं
वृत्प्रमातगेवत्यास्वानीकयायामाद्यं नुष्पि च शोके
प्रस्वरे थाउत्तरे दꣳष्ट्रे सोशब्दो दासे दुक्थे भिगीत-
क्रमयोरन्त्यर्यमेधे हायिस्तोभात् तृतीय मयोनौ कावे
गौथषष्ठꣳ सर्वत्रान्त्यपञ्चमं प्रोश्चयास्याꣳ सप्तमं
त्वाद्गुतादपञ्चयोश्च वैराजे प्रसशब्दाववृद् वैराजे प्रस-
शब्दाववृत् ॥ ९ ॥

॥ इति नवमः प्रपाठकः ॥

नकारश्च भवति सम्यगीतः कुवित्सु नायाम्बो-
घीय इहवद्दैवोदासे चोत्तमाया मप्रथमः स्वासु साहीये
चोत्तमाया मभिसामाध्यास्यायाए सर्वत्र योनौ हीडं
धत्ता द्व्यक्षरं पर्व दीचोद्गातपरत्वादेकाक्षर मून म-
धिकपर्वत्वाञ्च प्रथमस्वरे प्रत्यये क्रुष्यते भिप्रि त्र्यक्ष-
राणि सर्वासु न द्वितीयचतुर्थे पादे मराये भ्यास
एकाक्षरस्त्रिरुक्तः पादान्ते सर्वत्रापुरोनः पा-
दमध्ये च हिशब्दस्याभ्यासः प्रेङ्खाया मग्नेदी-
दिहि ॥ १

गूर्द्धे वृद्धं भवत्यकारोग्निप्रत्यये वादौ हिशब्दः
सौभरामहीयवकौल्मानां दासे च कावपर्णकूलीयाना
मो भवति साहीये च भिशब्दो नुत् कावे नाध्वतवत्य-
पर्स्वबोधीये च वाचि सर्व मोभवत्यनुस्यमो वा परा-
यान्त्वो भवत्यना तृतीयं क्रुष्ट मप्रत्युत्क्रान्त मा चतुर्थ-
कृष्टन्तु पादान्ते मन्द्रक्रुष्टस्वामन्द्रक्रुष्टस्य वृधन्यञ्जनानाए
स नित्य इत्येभ्यः परोभ्यासस्य देव्य श्रौर्णायवयो रो
भवति यकारे सानौ शब्दस्य सर्वत्राकारे वोधीय-
निधने च घोषे ॥ २

वीक्रौञ्चप्रमशाक्तत्रसञ्जयभरक्रन्दाभिकार्स्यश्रवस्यै-
ताकूपविशोविभीशककुभस्वारपर्सरस्याग्रादिष्वायास्य --

द्विनिकारवकारौ त्र्यवश्यावाश्वयश्चेषु च श्येयामध्यसमन्विता न निधनं हीषोऽषु या सामसु ॥ ३

श्यैते तृतीयादिन्या ओहोवायाः परं तृतीयं नीचं न तद्विप्रान्तयोर्बृहति च द्रासा द्वितीये कं सर्वत्रादर्शश्यमप्रथमतृतीयद्वयं यौसूचाकूस्तावतृतीयं नीच माद्याया साद्यं श्यमायान्तमसे चान्याद्वितीये नेकं सर्वत्र यानौ प्रथमे द्वे स्तोभे चोत्तरे वकार ओ भवत्यन्ते हिष्ठीयगवसितेषु स च प्रवृत्सर्वत्रान्त्य मयोनौ वसु च द्वितीयादसुतिथे च तृतीये प्रथमं योनौ जये च स्तावान्तर मयोनौ ॥ ४

क्रौञ्चे द्वे च मात्प्रथमोच्चमसूरासीये च तृतीयाद् गेष्णात् तृतीयं न मसोश्रवसश्चाद्वन्द्वान्ताज्जनिलोप उतद्विषायाश्चाद्यं श्रवायाश्च सेधे तु मत्स्पीयूषाद्यायां सतायस्य लोपः कृतिनि तृतीये द्वे सर्वत्र रम्यतेनुष्टुप् द्वितीये च षभे च प्राक् च तुर्श्ष्वयोनावो मिति च नीचः श्वे तृतीये पतृषट्वर एकचैं द्वे दसे च्चीये हाराद् योनिवद्विशोत्तमायां सोमाद्ययोश्चाग्नेये जास्वरं वृन्नविच्छन्दःसु प्रहूयसायाश्च द्यत्तर मद्वद्वादिस्तनिपार्श्वयोर्यथर्च्ः सर्वत्रास्तावहारयोरवश्ये हिस्तोमसु मरामरजीचभेचाकारान्तक्रान्तम-

योनावुदूहः सर्वत्रामीढे गतेश्च कनीयस्य त्वमोका-
रस्य कृतलेये त्वं पदगीतस्त्वसिद्धत्वात् ॥ ५

श्रुध्ये स्तावे तृतीये ष्यते सर्वत्र संवत्सायां तु तृ-
तीये गोमन्नश्च मरुता मिन्द्राꣳ स्वासूत्तमायां धसे
चतुर्थाद्यं योनिवद्द्ध्यमायाꣳ स्तावे द्वितीयङ्गातꣳ
कृणसाम्नत्राद्यान्त्ययोस्तु विकारो नासैधे धाह्याद्ययोः
पाह्युपा मापद्यतेऽथमोचꣳ षभङ्गविमजने च भुलंविः
स्मिन्त्सि च वरुपृश्निश्चैतमद्गेषु ष्टम्भे चैाशसूपे श्रौये
च नाकृदृꣳहव्यशसि कृष्टादेकं ध्यमायां मकारो
द्वितीयꣳ सम्मिस्नः सुरूपे पदगीत श्रोष्ठ्य हकारे
च ककारस्त्वौ भवति मराये द्विमात्रः ष्ठेष्वःकारस्त-
रायेषु प्यते नौ च कृणसाम्नि द्वितीये लान्देथ-
मोश्च मकुति चतुर्थे तु हणीजास्वरꣳ सर्वत्र काम्या-
चयतेनयताविम्निरे च दे दे चाविधाः सर्वचायोनौ
जास्वरꣳ श्रवमनसे च द्विषः श्रवमनसे च द्विषः ॥ ६

प्सु षडन्ते रद्धाष्कारणिधनवदुपान्त्ये भिराय-
वान्यत्र सुतादालुम्रापञ्चाद्धरश्चाभ्यासः क्रयाꣳराजे
ध्यमायां पाष्ठहृदाद्यायां चान्त्यस्य तमसे स्वासूत्तरयो-
र्वृणीत रुते चतुरक्षरे नाभ्यासे मराये हाउवा द्विती-
यात्संकृष्टादान्त्याविधाः सर्वत्र स्वासूत्तमायां प्रथमे

दे मूर्द्धन्या एव दन्त्याः स्वरोपधोष्मयोर्हितिहारी स्यादविकृतपूर्वपदवत्परिष्कृते चागमो लोप्यः ॥ ७

कार्ष्णश्रवसोत्तरयोर्व्यैः स्वदयासदाव्रधादस्मिन्सुराक्रौञ्चेस्वभानहिवामग्निर्वोवाजीय उपान्त्यं क्रुष्टं सर्वासु त्रिकवत्सायां चाद्ययोः प्रथमायां चतुर्थ मुत्तरयोः पञ्चमञ्च स्वासु वैराजे तृतीये प्रथमान्त्या वृद्धे आप्ररसं नाम्नि द्वितीयायाञ्च राधायां तृतीय मयोनौ कौत्सदष्ट्रोत्तराकूपारश्रुध्यपृश्निमानवाद्यरूणवैधृतवासिष्ठतिथकुभनित्येषु चनोतिषड्गशाक्वरयोराम्यान्तो योनौ ग्निस्वी वारे रिपिन्नुरपि शोके मानगोभिस्त्रिणिधने सौहविषरन्ध्रोत्तरयोर्गोभिर्लान्दे स्वान्याद्य मुपान्त्य मयोनौ ॥ ८

यस्ते हरे च श्येने दानाध्वरं प्रोवाराहश्रोताकयस्थिरं द्वितीय कर्षणं धर्त्तासाविसोचसस्तु सफे मादा स्याद्यरान्देव्ये प्रहू द्वितीयं मन्यतां वैराजे योनावन्त्ययोर्न्नतं वैश्वमनसे त्वात् स्तोभार्चिकसन्धिर्ग्रहणात्सप्रे द्वितीयान्ते प्रोत्तमाया माद्ये शोके चाद्ययोः शोक्ते च सुषश्रीणप्रत्नञ्च रूणसाम्नीलान्दे हीषीप्रभृत्युद्धारोन्त्याया मनुद्धारस्तमसोर्क्के योनावाद्ययोर्मागायतोद्घातनिघातौ ॥ ९

अथोहगीतीनां प्रस्तावोद्देशः स्तोभः पुरस्तादन्तर्वा प्रस्तोतुरन्ते चाविधाय उद्गातुस्तु काण्वर्षभपावमानजनित्राणाꣳ हुवाद्विर्वासिष्ठे पद्यो नादशे द्व्यक्षरो वा संक्रतिदार्ढच्युतयोश्चतुरक्षरो वा सुरूपाजिगैडसाकमश्वानाꣳ सदेवतोवा राजनशाक्वरर्षभयोर्हिंपाञ्जयनानदगौशृङ्गराक्षिदैवोदासानां .काण्वश्रैतकक्षार्षभश्यन्नायास्यैडोच्चौरन्वैडसौपर्णमोक्षमागीयवजराबोधीययद्वाहिष्ठीयोत्सधवाम्नश्वारसामराजपौरुमीढपूर्ववारवन्तीयवार्त्रतुरयशववैरूपहृस्वाबृहदापशामहादिवाकीर्त्तानां वान्तःक्रुष्टाद् वृष्णोद्विर्वारवन्तीय आत्मनि च महादिवाकीर्त्ये यान्तो दाशस्पत्यभासशाम्मदगायत्रासितानां जारान्तो वीङ्कवसिष्ठप्रियपज्राणां वारान्तो वैश्वामित्रे हाउकारान्तः सन्तनिजमदग्न्यभवीर्त्त कार्त्तयशाकारान्तत्वाष्ट्रीसाम्नां जाराग्निन्दूतोपक्रमाणान्तं एवाविभाग्यानाम् ॥१०

यौक्ताश्वैडयास्यवैशोकक्रोशश्रैष्टोद्दशपुलदैर्घतमससिमानांनिषेधवैराजानां द्व्यक्षरोभ्यस्तो द्व्यक्षर आनूपैटतसौहविषवैष्णवोत्तरपयोन्तःस्वराणा मग्निन्दूताभ्यस्तामध्यमक्रौञ्चस्य पादोभ्यस्तो वषडन्ताभ्यस्ताकूपारराजनपयसां द्वादशाक्षराणि च रैवतर्षभे त्र्यक्षरो

बृहत्के सोमसामगायत्रीक्रौञ्चवैरूपौदलगायत्रगौशनं-
सैन्धुक्षितमैधातिथरोहितकूलीयैहवदैश्ववाहेन्द्रस्यय -
श:कण्वबृहत्त्रैष्टुभश्यावाश्वगौतमवार्षाहरवाजभूरका-
र्णश्रवसानां चत्वारि द्वे वान्त्ययो: षट् शङ्कुवार्हतवा-
जजित्स्वाररोहितकूलीयासितयौक्तस्रुचाना मष्टावौ-
रुक्षयजागतसामसाम्नोरेकादशोत्तरे जनित्रे द्वादश
हरिश्रीयन्ते स्तोभ उपायान्त:पदनिधनेषु निधनश्च
तदङ्गं स्याद् द्विरेकवृषे त्रिर्वा पदस्तोभेष्विलान्दाद्ये
त्रिरुक्तं यथोक्त मितरेष्वन्त्ये वा द्व्यक्षरे महानाम्नीषु
द्विपदासु प्रस्ताव: शाक्वरप्रथमेष्वध्यासपुरीषेषु च
यथोपदिष्टं वैच्छन्दसेषु गीतं प्रास्ताविक मेव स्याच्य-
वनादीना मप्रस्ताव्या उत्तरा: प्रस्ताव्ये वा सन्तनिन:
प्रस्ताव्ये वा सन्तनिन: ॥ ११ ॥

॥ इति दशम: प्रपाठक: ॥

॥ इति सामप्रातिशाख्यं समाप्तम् ॥